

कबीर कसौटी

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

श्री:

कबीरकसौटी



जिसमें

कबीरदासजीकी गूढ कविता, जीवनचरित्र
और सुन्दर ज्ञानोत्पादक साखी वर्णित है,

जिसका

**स्वर्गवासी श्रीबाबूलैहनासिंह साहब कबीरपंथी
डिप्टी कान्सरवेटर जंगलातपटियालेने बहुत
ग्रन्थोंसे निर्णय कर बनाया.**

और

**बाबू निहालसिंह कबीरपंथी डिप्टी कान्सरवटर
जंगलात पटियालेके द्वारा प्राप्त कर**

**खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई**

संस्करण :मार्च २०१६, सवंत् २०७२

मूल्य : ३० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass
Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial
Estate, Pune 411 013.

भूमिका.



मुद्दतसे मेरा इरादा था कि, साल सम्वत् श्रीकबीरजी साहबके प्रगट होनेका कहींसे मिले, तलाशकरते२– लाला माधोराम साहिब पाएलवाले जो दीवानीके शरिश्तेदार थे उनसे यह साखी मिली :––

दोहा–संवत् पन्द्रहसौ पछत्तरा, किया मगहरको गवन।
माघ शुदी एकादशी, रलो पवनमें पवन ॥

एक रोज मैं पटियालमें जो दादूपंथियोंका स्थान है । उसमें सताक दर्शन करनेको चलागया । एक सन्त बहुत उमरके उस मकानमें उतरे हुयेथे, उनसे पूंछा अय दयालुजी ! कुछ श्रीकबीरजीके साल संवत्की आपको खबर है कि, कब और कितनी उमरतक काशीमें रहे उन्होंने कहा कि, हम सीनेबसी सुनते आये हैं कि, श्रीकबीरजी काशीजीमें एकसौ वीसबरस रहकर मगहरको गये । फिर भी जो सन्त आते उनसे यही चर्चा रहती, एक संत दक्षिण देशसे कबीरपंथी वंशकी डोरीके बहुत वृद्ध शरीरके आये, उनके पुस्तकमें लिखा हुआ देखा कि, ज्येष्ठ शुदी बडसायतको सोमवारके दिन लैहर तालाबमेंसे नीरु जोलाहा उठाकर लाया, इस तरहसे साल संवत् श्रीकवीरजीके काशीजीमें प्रगट होनेका मिला । हिंदुइजम एक अंगेरजीकी किताव है, उसमें लिखा है, कबीरजी १४०० सदी ईस्वीके अंतमें थे । दूसरी एक डिक्शनरी फारबेस की है, उसमें दर्ज है कि, १५०० पंद्रवीमें थे । तीसरी एक मूरसाहबकी किताब है उसमें लिखा है कि, १९०० सोलहवींके आदिमें थे । चौथी एफ बागोबहार है उसकी लुगातमें दर्ज है कि, साढे तीन सौ बरस हुये हैं । तव कबीरजी थे यह किताब १८५४ ईसवीमें

छपी है। इन चारोंसे कबीरजीका सारा हाल मालूम हो सकता है कबीरजीकेनाम अनंत हैंऔर लीला भी अनंत हैं कोई पार नहीं पासकता है; जब यह इतनी

१४००	२
१५००	१००
१९००	१८

बातें हासिल हुई, तब मैंने इस कबीर कसौटी पुस्तकको वैशाख शुदी १ साल १९४२ में लिखना शुरू किया और माह वदी ८ को पूर्ण हुआ। साल १९४२ कई तवारीखोंसे मिलाकर लिखा है। जिस सहिबोंको इससे जियादह मालूम होवे सो इस किताबको देखके बन्देको इत्तिला दें, ऐन शुक्र गुजार रहेगा। अब मैं अपने अन्नदाताको आशीस देकर भूमिका खतम करताहूं हमारे श्रीमहाराजा राजेश्वरको गुरू महाराज आनन्द रक्खें। श्रीमहाराजाधिराज राजमान राजेन्द्रसिंह बहादुरको गुरु माहाराज चिरंजीव रक्खें। तिनकी कृपासे लिखनेकी फुरसत मिली दासानुदास हरीदासउपनाम लैहणासिंह कबीरपंथी पंजौरीचेला गुसाँई श्रीरामदासजी साहिब महंत डेरा वसीवालोंकी भूल चूक मुवाफ करनी, जो पढेंगे उन सबको मेरी बन्दगी पहुँचे, जबश्री कबीरसाहिबका नूर सत्यलोकसे जो कुछ माजरा था। उन्होंने सब देखा। और आनकर स्वामी रामानंदजीसे कहा कि कलके दिवस मैंने यह हाल देखा, तब स्वामीजीने इष्टानंदसे कहा कि जो ज्योति कल तुमने देखी है। थोडेही दिनोंमें उसके विदित होंगे। दूसरे दिन तमाम काशीमें शोर मच गया कि नीरू जोलाहाके घरपर लोग बहुत आते जाते हैं। आगे कथाका आरंभ है इससे सारा हाल मालूम होगा॥



अथ

कबीरकसौटी प्रारम्भः

★

साखी—कबीरकसौटी रामकी, झूठा टिके न कोय ।
रामकसौटी सौ सहे, जो मरजीवा होय ।।

सत्यनाम

मुनींद्र करुणामय कबीर श्रीकबीर साहिबका काशीजीमें प्रगट होकर, अली उपनाम नीरू जोलहाके घर लहरतालावसे आना । गगन मण्डलसे उतरे, सतगुरु पुरुष कबीर ।। जल मजघा पौढन कियों, सब पीरनको पीर ।। कमल कमोदिनि अनंत खिले तहां करुणामय करतार मिले ।। कली कली अनंत अली गुंजित गुंजित थकिति भये । मोर मराल चकोर तहांसब आन तालाबको घेरलये । चौदहसौ पचपन १४५५ साल गिरा चन्द्रवार इक ठाट ठए । जेठ सुदी बरसायतगी पूरनमासीतिथि प्रगट भए ।। टेक ।। घन गरजे दामिनि दमके बूदें बरसे झरलाग गए । लैहर तलाबमें कमल खिले । तहां कबीर भान प्रकाश भए ।। टेक ।। गवना लेकर नीरु आयो तृषावंत भई तिसकी नारी । जल पियन गई बालक देखा, भयभीत भई मनमें भारी ।। यह बालक यहांपर है कैसा किन डारदिया विधवा क्वारी ।। नीरु बोले तू सुन नीमा, केइ

बालक होकर बिनशगये, मेरो घर खाली है प्यारी ।। टेक ।। हरीदासको हीरा हाथ लग्यो तिन शिरको मुकुट किया भारी ।। नीमा बोली तुम सुनो मियां मेरो मन डरपत है अति भारी ।। लोकलाज कुलकान जायवी काशीमें शोर मचे सारी ।। टेक ।। सुंदर सूरत मोहनी मूरत कमलनैन छबि अतिभारी ।। इतनी माता जग प्रगट भई तिन ऐसो सुत जन्यो नारी ।। टेक ।। मनमगन भये कर बाल लये नारी पुरुष घर आय गए ।। कुलकी सब नारि जो गान लगी मन मोद आनंदके गानगये ।। टेक ।। जब बालक घरमें दीठ परयो तब सुरबर सुरबर भइ भारी ।। यह लडका कैसा लाये हो मिल पूछन लागीं सब नारी ।। टेक ।। बिनजाम्यों लडका हमें मिल्यो याको हम घरमें लाये हैं ।। हरीदासको प्यारो लागतहै यह सबके मन भाये हैं । काजीको बुलायके कुरानको खुलायके देख्यो जब बीचमें कबीर नाम पाये हैं । अकबर कुबरा किबरिया दिखाई दिया काजी विस्माय दांत ऊंगरी दबाये हैं । एक आयो दोय आयो पांच चार औ सात आयो न्यारो न्यारो देख्यो जबहीं तबहीं सब घबराये हैं । यही चारों नाम दिखलाय दिये । सबको चुप ह्वैके अपनी किताबोंको छिपाये हैं ।

गरीब–सगल कुरान कबीरहै हरफ लिखे जो लेख ।। काशीके काजी कहैं गई दीनकी टेक ।। गरीब-भक्ति मुक्ति ले ऊतरे मेटन तीनों ताप ।। मोमनके डेरा लिया कहैं कबीरा बाप ।। असल निशानी नूरकी, सतगुरू लाये आप ।। नूर वाफ जगमें भये कहैं अलीसों बाप ।। काजी लोग कहने लगे कि, ये चारों नाम खुदाके हैं । यह लडका गरीब जुलाहेका है । ऐसा बडा बुजुर्ग नाम इसका नहीं रक्खा जायगा । फिरकर उन सबने अपनी अपनी किताबोंमें जो देखा तो सिवाय इन चार नामोंके और कई नाम पाये । जिंदा, खिजर पीरहका, कहने लगे, अय अली तू इसको किसी तरहसे मारडाल उनके कहनेसे जब भीतर लेजाकर इरादा मारनेका करने

लगा । तब कबीरजीने यह शब्द कहा । अब हम अवगतसों चले आये । यह माया तौ जग भरमाया मेरा भेद नहीं पाये ।। टेक ।। ना मेरे जन्म न गर्भ बसेरा बालक ह्वै दिखलाये ।। काशीपुरी जंगलमें डेरा तहां जुलाहाने पाये ।। टेक ।। ना मेरे गगन धरनि पुनि नाहीं दोस ज्ञान अपार ।। आत्मरूप प्रगट निज जगमें सोतो नाम हमार ।। टेक ।। ना मेरे अस्थि रक्त नहिं चांमा हम हैं शब्द-प्रकाशी ।। देह अपार पार पुरुषोत्तम कहि कबीर अविनाशी ।।

आखिरको हारके कबीरही नाम रक्खा । और घरघरमें चरचा होने लगी कि, देखो यह लडका जो नीरू लाया है । शब्द बोलता है । और जब खानेको देते हैं तौ कुछ भी नहीं खाता है । नाभाजी कहते हैं ।।

पानीते पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर ।। अन्न अहार करता नहीं, ताको नाम कबीर ।। गरीब—अनंत कोटि ब्रह्मांडमें बंदी छोड-कहाय । सोतो पुरुष कबीर हैं जननी जना न माय ।। पार्षअंग ।। गरीब—चौरासी बंधन कटे कीनी, कलप कबीर । भवन चतुर्दश लोक सब, टूटै यम जंजीर । गरीब—जल थल पृथ्वी गगनमें, बाहर भीतर एक ।। पूरण ब्रह्म कबीर है, अवगत पुरुष अलेख ।। गरीब—सेवक होकर ऊत्तरे, इस पृथ्वीके माहिं ।। जीव उधारन जगतगुरु, बारबार बलि जाहिं ।। अबलाअंग ।। गरीब—साहित पुरुष कबीर है, योनि परे सो जीव । लखचौरासी भरमहीं, कालजाल घट-सीव ।।३३।। गरीब—साहिबपुरुष कबीरने, देह धरे नहीं कोय । शब्दस्वरूपी रूप है घट—घट बोलै सोय ।।३४।। अनंत कोटी अव-तार है, मायाके गोविंद । करताह्वै ये ऊतरे, फेर परे यम फंद ।।३५।।

त्रैलोकीका राज्य है, ब्रह्मा विष्णु महेश । ऊंचा धाम कबीरका, बानी बिरह बिदेश ।। नीरूके घरपर उसी रोजसे लोगोंका हुजूम होने लगा ।। संत लोग सुन २ कर आने लगे, जो देखैं सो कहैं कि यह तो कोई नूरी जिस्म है । मगर जो लोग कम अक्ल और अज्ञानी थे, वे हँसते और निंदा करतेथे ।। पार्ष अंग ।। ४१० ।। पांचबरसके जब भये, काशी माँझ कबीर । गरीबदास अजब कला, ज्ञान ध्यान गुणसीर ।।

जब बालकोंमें खेलनेको जाते तो राम राम कहते कभी हरिहरि बोलते । तब जो कोई मुसल्मान इनकी बातको सुनता तो यह कहता कि तू बड़ा काफिर होगा, उसको यह जवाब देते कि जो किसीको नाहक मारताहै और झूठा वेष बनाकर दुनियाको ठगताहै और नशा पीताहै । या खाताहै, या पराया माल मारताहै, या अपना घात करता है, सो काफर है, और जो रास्तामें लूटे सो काफर जीतसू छूटे ।।

गलाकाट बिसमिल करैं, ते काफर बेबूझ ।। औरनको काफर कहैं, अपना कुफर न सूझ ।। १ ।। एक दिन बालकोंमें खेलते थे माथेमें तिलक और गलेमें जनेऊ पहिरे हुएथे । ब्राह्मण लोगोंने इस हालतको देखके कहा कि, यह तेरा धर्म नहीं है, तैने वैष्णवरूप कियाहै विष्णु २ और नारायण २ और गोविंद २ और मुकुंद २ कहता है । यह हमारा धर्म है इसपर कबीरजीने यह शब्द कहा ।। शब्द ।। मेरी जिह्वा विष्णु नैना नारायण हिरदै बसैं गोविंदा । यमद्वारे जब पूंछि सब बरे तब क्या करि समुकुंदा ।। टेक ।। हम घर सूत तनैं नित ताना कंठ जनेउ तुम्हारे । तुम नित बांचत गीता गायत्री गोविंद हृदय हमारे ।। टेक ।। हम गोरू तुम ग्वाल गुसाँई जन्म जन्म रखवारे । कबहीन वारसों पारचराये ।। तुम कैसे खसम हमारे ।। टेक ।। तुम ब्राह्मण मैं काशीको जुलाहा बूझो मेरा ज्ञाना ।। तुम निज खोजत भूपति राजे हरीसंग मोर ध्याना ।।

हिन्दू और मुसल्मान जब दोनों मजहबके लोग आन आनकर बहस करने लगे और कहने लगे क तू निगुरा है । तब कबीरजी एक रोज बडे सबेरे उठकर गंगाजीकी पैडियों पर जाके पडगये । थोडी देरके पीछे स्वामी रामनंदजी स्नान करनेको उसी घाटपर आये उनके पडवेकी ठोकर जब कबीरजीके शिरपर लगी तब बापरे २ पुकार कर रोने लगे, स्वामीजीने कहा राम २ करो, उसी वक्त ऐसे जोरसे राम २ रटने लगे कि जिस तरफसे आते थे, तमाम लोग जाग गये । और कहने लगे कि नीरू के लडकेको क्या हुआ है । मुसल्मान होके राम राम कहता है ।। उसी तरहसे घरपर आये । जब माई नीमाने देखा तो कहा की तुझको किसने बौराया, कहा हम रामानंदजीके चेलेहैं । जब यह खबर और लोगोंने सुनी तो बडा ताज्जुब करने लगे, और कहनेलगे कि इसकी सुन्नत कीजावे तो बेहतर हो ब्राह्मणोंकी भी यही राय हुई ।। समने इत्तफाक करके पकडलिया और बांधके सुन्नत करने लगे । तब कबीरजीने यह शब्द कहा । शब्द । जोर जुल्म तुम करतेहो मैं न बदोंगा भाई । जोखुदा तोहे तुरक करता है तो आपे कटी न आई ।। सुन्नत कराय तुरक जो होवे औरतसूं क्या कहिये ।। अर्ध शरीरी नारि बखानों तातें हिन्दू रहिये ।। घाल जनेऊ ब्राह्मण होवे तो औरतकू क्या पहराया । वह जन्मकी शूद्री परशे तुम पांडे क्यों खाया ।। हिन्दू मुसलमानकी एक राह है सतगुरु मोहिं बताई । कहैं कबीर सुनोहो संतो राम न कह्यो खुदाई ।। इस शब्दको सुनके सब हिन्दू मुसल्मान जमा होकर स्वामी रामनंदजीके पास फर्यादी गये । जाकर कहने लगे कि तुमने एक मुसल्मान जोलाहाके लडकेको चेला किया है । स्वामीजीने कहा उसको पकडलावो ।। स्वामीजीकी आज्ञा पातेही लोग पकड़लाये । जब रुबरु आये तब स्वामीजीने आडा परदा डलवाकर पूंछा कि क्योंरे लडके हमने तुझको कब चेला कियाहै ! कबीरजीने जवाब दिया । स्वामीजी और कोई मंत्र कानमें देते हैं,

आपने तो रामनाम शिर ठोककर दियाहै ।। फिर स्वामीजीको वह बात चित्त आई ।। तो परदा दूर करके छातीसों लगाकर कहा कि इसके चेला होनेमें कुछ सन्देह नहीं है ।। सब लोग खिसियाने होकर चुपचाप अपने २ घरको चले आये ।। कबीर भी नीरुक घरपर आनकर कपडेका काम करने लगे ।। जब कोई संत आते तो चाका लगावते और कोरे बरतन मँगाकर भोजन तैयार करवाकर संतोंकी टहलमें मशगूल रहते माई नीमा नाराज होकर डांटती और कहती कि यह हमारे कुलकी रीति नहीं हैं । जो तू करता है ।। धर्म दासजीने माईकी ओरसे एक शब्द कहाहै ।।

शब्द ।। हमारे कुल कौने राम कह्यो ।। टेक ।। सुनो दिवनियां सुनो जिठनियां अचरज एक भयो । सात सूतया मुडिया खोये मुंडियां क्यों ना मोरा ।। टेक ।। माय तुरक नी बाप जोलाहा बेटा भक्त भये ।। जबकी माला लई न पूते तबसे सुख न भये ।। नित उठ कोरी गागर मांगंत लीपत जन्म गये ।। टेक ।। पंचज शत मुंडिया और सुबे कबीरा कहांसे भये ।। रोय २ कहति कबीरकी माता बेटा मर न गये ।। टेक ।। हँसिहँसिकहतकबीरकी भैना भैया अमर भये ।। कहैंही धर्मदास सुनो भाइसाधो कबीरा साहिब भये । कबीरजीका अब हर रोज रामनन्द स्वामीके यहां आना जाना होगया । एक दिन स्वामीजी स्नान करके अन्दर परदा डलवाकर मानसिक पूजा करने लगे ।। पूजा करते करते ठाकुरजीको स्नान कराकर वस्त्र और मुकुट पहरा दिये, फूल माला पहराना भूलगये ।। सोचते थे कि अगर मुकुट उतारकर पहरावें तो दुबारा स्नान कराना पडेगा ।। इसी सोचमें गडगाप हो रहे थे इतनेमें कबीरजीने ड्योढीके बाहरसे आवाज देकर कहा।। किहेस्वामीजी घुंडी खोलकर पहरादो तब स्वामीजीने जाना कि यहतोपूर्णब्रह्म है । जो अंतर्गकी सब जानता है ।। ड्योढी पदरा दूर करके आसन दिया । और अंकमाल किया ।। स्वामी घूंडीखोलके तब माला गलडार । गरीब-

दास इस भजनको जानत है कर नार ।। डचोढीपरदा दूरकर लीया अंगलगाय ।। गरीबदास गुजरी बहुत बदनै बदनमिलाय ।। मनकी पूजा तुमलखी मुकुट मालपरवेश ।। गरीबदास गतिको लखै कौन बरन कौन भेश ।।

आगे कथा सर्वाजीत पंडितकी बहुतहैं मगर थोडासा प्रसंग लिखा ।। सर्वाजीत जब अपनी माके उपदेशसे काशी जीमे आये तो उसकेसाथ पुस्तक वैलोंपर लदेहुये थे ।

नीरू जोलाहाकी लडकी कुवेंपर जल भर रही थी ।। पंडितजीने उससे पूछा कि कवीरका घर कहां है, लडकीने जबाब दिया कबीरका घर शिखर है जहांसलैहली गैल पांव न टिकै पिपीलिक पंडितलादे बैला । पंडितने जाना कि यह लडकी जरूर कबीरको जानती होगी ।। उसने एक पानीका लोटा भरकर उस लडकीके पास दिया और कहाकि इसको कबीरके आगे रखना । जो जवाब वे दें । सो हमसे कहना जब उस लडकीने वह बर्तन कबीरजीके आगे रख दिया उन्होंने एकसूई उस जलमें डाल दी और लडकीसे कहा कि इसको लेजा लडकी उस बरतनको पंडितजीके पास लाई ।। उसने पूछा कि क्या कहा उसनेजो देखासो कहा ।।पंडितजी सुनकर विस्मित भये काशीके सब पंडित जमा होकर स्वामी रामानंदजीके पास जाकर कहने लगे कि एक पंडित सर्वाजीत काशीमें आया है ।। कोई पंडित उसके साथ मुकाबला करने योग्य नहीं है क्या किया जावे स्वामीजीने कहा कि जो लडका तुमको मिले उसको हमारे पास लावो ।। वे लडकेकी तलाशमें जब बाहरको घरसे निकले तब उनको कबीरजी मिले उसको स्वामीजीके पास ले गये ।। स्वामीजीने कहा यह तो अजीत पुरुष है इनको कोई नहीं जीत सकेगा जब अगले दिन सभा जमी, और गद्दीपर तैयारी सब अच्छी तरहसे हो चुकी तब सब पंडित लोग आकर जमा हुए ।। कबीरभी आये और सबको बंदगी की ।। सर्वाजीतने कहा कि जो जो तुम बोलना ।

चाहतेहो सो कहो ।। सबोंने एक मुख होकर कहा कि आपके साथ कबीर वोलेगा उसने कहा वह कौनहै कहा कि कबीर जोलाहा है । उसने जवाब दिया कि जोलाहा कैसा तब कबीरजीने यह शब्द कहा--

शब्द ।। अस जोलहा काहु मर्म न जाना । जिन जग आय पसारित ताना ।। टेक ।। धरणि अकाश दोऊ गाड खनाया । चाँद सूरज दोऊ नार बनाया ।। सहसरताले पूरिन पूरी । अजहुं बिनें कठिन है दूरी ।। कहहिं कबीर कर्म सों जोरी । सूतक सूत पिने भलकोरी ।। ऐसे शब्द और भी बहुत हैं ।। जब सर्वाजीत हारे और कबीरजी जीते तब कबीरजीको पंडितने प्रणाम किया और यह कहा कि मुझको अपना शिष्य करो ।। फिर कबीरजी उसको स्वामीजीके पास लेगए ।। उनका शिष्य भया ।। तब काशीके पंडितोंने कबीरजीको एक अगर और दिया ।। अब काशीजीमें कबीरजीके तीन अगरका यज्ञोपवीत भया इति ।। एकदिन कई संत आए कबीरजीको कहने लगे कि हे कबीरजी ! आपका घर कसाइयोंमें है जहाँ दशकसाई वहां एक कबीरकी क्या बसाई ।। साखी ।। कबीर तुम्हारा झोपडा गल कटयोके पास ।। करेंगे सो भरेंगे तुम क्यों भये उदास ।। कपडा बुननेके काममें लगे रहते जो दिन भरमें पैदा करते आधा पुण्य करते बाकी आधा जो बचता सो उन घरवालोंको देते, जहां रहते थे । एक दिन मण्डीमें कपडा बेचने गये ।। कबीरजी तो पांच टके कहते लोग तीन कहते ।। तीन दिन हुए, कोई तीन टकेसे अधिक न देवे, एक दलाल आया । उसने इनसे लेकर थोडीसी दूर जाकर उसका मोल बारह टके किया लेनेवालेने सात दिये ।। सो कबीरजीको दिये ।। कबीरजीने पांच टके लेकर यह साखी कही ।।

साखी--सांच कहे तो गारिहो, झूटे जग पतिआय ।। पांच टकेको दोबटी, सात टकाकी जाय ।। एक दिन फिर मंडीमें थान बेचने गये ।। इतनेमें एक संत वस्त्रहीन वहांपर आया, और कहा

कि हे भक्तजी ! वस्त्र चाहता हूं । उसको कबीरजी आधा थान देने लगे । तो उसने कहा कि आधेसे मेरा काम नहीं होता है ।। तब पूरा थान दे दिया, आप घर पर नहीं गये घरके लोग तीन दिन तक रास्ता देखकर चुप होगये ।। कोई बनजारा बैल भरकर घरपर लाया, माईने शोर मचाया, मगर उसने माईकी कुछ बात न सुनी घरमें अनाज गेरके चला गया।।कई आदमी तलाश करके कबीरजीको घरपर लाये जब घरपर आये, सब अनाज जो जमाथा, सो गरीबों मोहताजों को खवा दिया ।। जब यह खबर ब्राह्मणोंने सुनी तो कबीरजीके यहां आकर गालियां देदेकर कहने लगे यातो कुछ उसमेंसे जो माल तुझको मुफ्तका मिला है हमको दे नहीं तो हम तुझको नगरसे बाहिर निकाल देंगे ।।

क्या मैं घर काहूको फोरचो । मानुष मारचो क्या धन चोरचो ।। क्या मैं बाट पराई मारी । क्या मैं तकी पराई नारी ।। ऐसा क्या कसूर मुझसे हुआ है जो नगरको तजूं ।। खैर अब तुम यहांपर आएहो, यहां ठहरो, मैं बजारमें जाता हूँ, जो कुछ मिलेगा, सो तुमको दूंगा । वहांसे उठकर बाहिरको चले गये ।। जाकर राग गौरी गाने लगे कि फिर दुबारा पहलेकी तरहसे कोई बनजारा बहुतसा माल लाया, कबीरजीको ढूँढकर घरमें लाए ।। ब्राह्मणों और मोहताजोंको जो कुछ आया था, सब दे दिया ।। ब्राह्मण धन्य धन्य करते अपने घरको गये ।। मगर बहुतसे मतिहीन कुबुद्धि और क्रूर कहने लगे कि यह जुलाहा राजावोंसे और कहूंसे धन लाया है, चलकर राजासे कहें कि यह दंडके योग्य है, किसी तरहसे चैन नहीं थी ।। हर तरहसे आन २ कर दिक्क करते, मगर हारके जाते; कोई पार न पाते थे । कथा, ब्राह्मणोंकी बहुत है मगर यहां थोडासा हाल लिखा है ।। लोग जो कबीरजीके घरमें लोई कहते हैं तिसका हाल आगे लिखते हैं ।

अथ लोईकी कथा

लोई-प्रकाशको कहते हैं । नूर आब ।। मांड–तुरानी ।। पान–इज्जत ।। कमल कमली । सभा–पंचायत ।। कम्पनी नाम स्त्री बाचक है ।। जब कबीरजी तीस वर्षकी उमरके हुए, तब एक रोज गंगाजीके किनारे पर शैर करते हुए एक जंगलमें पहुँचे वहांपर एक बनखंडी बैरागीकी कुटी थी । उस स्थानपर जाकर बैठ गये और थोडी देरके बाद एक लडकी लगभग बीस बर्षकी बयसमें थी, जिसका लोई नाम था, सो वहाँपर आई कबीरजीको पूछने लगी कि आप कौन हो ?

जवाब–कबीर हैं । जाति क्या है ? ज०–कबीर हैं । भेष क्या है ज०–कबीर हैं, बहुतसे संत यहांपर आते जाते रहैं हैं कोई ऐसा भेष नाम जाति नहीं सुना है ।। कबीरजीने कहा तू सच कहतीहै । ये तीनों सबसे न्यारे हैं इतनेमें वहां कइएक संत और आकर बैठगये ।। थोडी देरके बाद उस लडकीने बहुतसा दूध वहांपर लाकर रक्खा उन सन्तोंने उसको सात पानवाडोंमें बांटा पांच तो संतोंने लिये एक लोईको दिया । सातवां कबीरजीको दिया ।। उन्होंने लेकर धरती पर रक्खा ।। जब सब संत अपना अपना पी चुके तब उन्होंने कबीरजीसे कहा, कि आपने क्यों नहीं पियाहै ? कबीरजीने जवाब दिया कि, एक संत गंगापारसे आते हैं उनको देंगे।। तब लोईने कहा हे साहिब ! आप अपना बांटा पीलें । उस सन्तके वास्ते और बहुतेरा है ।तब कबीरजीने कहा हे लडकी ! हम शब्द आहारी हैं।। इतनेमें वह संत जिसका जिक्र था आन–पहुँचा, वह पनवाडा उसको दिया फिर वे संत लोईसे पूछने लगे । कि हे लड़की ! तू इस जंगली बीयाबानमें किस तरह रहती है ।। तेरे माता और पिता कहां रहते हैं ।। लोईने जवाब दिया, कि मेरे माता पिता कोई नहीं है जो संत यहां रहतेथे, थोडे अरसेसे उनका परलोक होगया है, उन्होंने

मुझको पालाथा, अब मैं अकेली यहां रहती हूँ ।। वे संत कौनथे । और किसतरहसे तू उनके पास आई ? अब लोईने अपनी व्यथा कहनी शुरू की, जो संत यहां रहतेथे, वे वैरागी वनखंडी दूधाधारी थे ।। जो कोई संत यहांपर उनके पास आते थे, और मेरे आनेका हाल उनसें पूछतेथे, तो बाबाजी उनके पास यहहालयों कहते थे । एक रोज हमे गंगाजीके तीर पर स्नान करने लगे, इतनेमें एक तुला कमलीमें लिपटाहुआ हमारे पास आनकर बदनसे लगा, तम हमने जो इसको खोला, तो उसमेंसे एक लडकी मिली, हमने इस लडकीको दूधकी बाती देदेकर पाला है उन वस्त्रोंमें मिलनेके सबबसे नाम लोई रक्खा है । यह कथा जो महाराज स्वामीजी संतोंको सुनाया करते थे सो मैंने तुमको सब सुनादी है ।। यह कथा लोईके मुखसे संत सुनकर चुपहुए, फिरलोई कबीरजीकी गंभीरता देखके कहने लगी हे स्वामीजी ! मुझको कुछ ऐसा उपदेश करो जिसमें मेरे मनको शांति होवे । कबीरजीने लडकीका साफ दिल देखकर यह उपदेशकिया सत्यनामका जप और संतोंकी टहल मन लगाकर करती रहो । जबयह वचन महाराजके मुखारविन्दसे-सुना तो सुनतेही जगत्की वासना दिलसे दूर होगई, जो डेराथा सो सब उन संतोंके हवाले किया, कबीरजीके साथ काशीमें आकर संतोंकी टहल बमूजिब फरमाने कबीरजीके हर रोज करनेलगी ।। जो काम कपडेका कबीरजी करते थे सो उसने भी सीख लिया । नीमामाई यह जानतीथी, कि लडका दुलहिन लाया है । जब बहुत मुद्दत हुई तो कहने लगी कि नाहक ब्याह कराकर दुलहिनलाया है कोईभी बात दुनियादारीकी नजर नहीं आती है । जब माई की समझ ऐसीथी तो लोगोंका क्या दोष है ।। जो शब्दोंमें कबीरजीने कहाहै कि, कहैं कबीर सुनोरे लोई । यारीलोई यह कुल सभाको कहाहै । या अपनी बुद्धिको या संसारको ।। लोईका होना कबीरजीके पास लोगोंने बहुत तरहसे अपने अपने प्रेम और बेखबरीसे लिखा

है । असल हाल किसी बिरलेको मालूम है जिसने बहुतसी वाणी कबीरजीकी देखी होंगी ।। बहुत बक्त माया स्त्रीरूप होकर छलने आई कबीरजीने मायाके ऊपर बहुत शब्द कहे हैं ।। कबीरजी तो बालब्रह्मचारी हैं नारीके त्यागनेके बहुत शब्द कहेहैं ।। थोडेसे प्रमाणके वास्ते लिखते हैं ।।

साखी ।। कारी नागन विष भरी, बिषलै बैठी हाट । पाले परी कबीरके, कीन्ही वारह बाट ।। साखी ।। कबीर ।। नारी निरख न देखिये, निरख न कीजै दौर । देखत ही ते विष चढे, मन आवे कछु और ।। साखी ।। कबीर जो कबहुंक देखिये, बीर बहिनके भाय ।। आठ पहर अलगा रहै, ताको काल न खाय ।। साखी ।। भग भोगैं भग ऊपजैं भगते बचा न कोय ।। कहै कबीर भगते बचा, भगन कहावे सोय ।। कबीर–गाय भैस घोडीगधी, नारि नाम है तास । जा मन्दिरमें ये बसैं, तहां न कीजै वास ।। कबीर ।। कामी क्रोधी लालची, इनतें भक्ति न होय । भक्ति करें कोइ शूरमा, जात वरणकुल खोय ।।

कामके अंगमें

कामके अंगमें पछत्तर साखी कहीं हैं ।। जिसका रज वीर्यका शरीर और माता पितासे पैदा और बिंदुसे संतान वह कभी सतगुरु पदको प्राप्त होसक्ता है ।। जो चार दागसे रहित है सो सत्तगुरु है ।। प्रमाणके वास्ते वाणी गरीबदासजीकीमेंसे साखी लिखते हैं ।।

गरीब–देहीको सतगुरु कहै, यह सब अंदरज्ञान ।
चार दाग आया नहीं, तिसको सतगुरु जान ।।

अथ, कुदरतसे कमालका होना लिखते हैं

बहुतसे लोगोंने कमालजीको कबीरजीका पुत्र अपने प्रेम और वाणीसे बेखबरी होनेके सबबसे लिखा है ।असली हाल जो शब्दोंके देखनेसे

और संतोंके मिलनेसे मालूम हुआहै सो नीचे लिखते हैं एक दिन कबीरजी और शेखतकी गंगाजीके तटपर शैर कर रहेथे । इत्तिफाकन एक मुरदा लडका दो तीन महीनेका शेखने देखा तो कबीरजीसे कहा कि, यह लडका बडा खूबसूरतहै मगर बेजान है । तब कबीरजीने कहा किस द्वारसे गयाहै और कहां है, शेखने कहा मुझको इतनी खबर नहीं है । आप बतावें तब कवीजीने कहा कि न कहीं गया न आया जहांका तहांमौजूद है ।। फिर शेखने अर्ज की अगर मौजूद है तो बुलाओ, तब कबीजीने लडकेके कानमें शब्द कहा लडका रोनेलगा तब तकीने कहा आपने कमाल किया ।। कबीरजीने कहा यह तो खुद बखुद कमाल है, लोईको लाकर दिया उसके स्तनोंसे दूध उतर आया लोईको माँके समान जानता था ।। लोईकी गोदमें बालक देखके अनजान लोग कबीरजीको गृहस्थ जानतेथें । यह हाल जिनको मालूम नहीं है । अबतक यही जानते हैं, कि कबीरजी गृहस्थ थे ।। कमालके रेखते बहुत हैं थोडेसे लिखते हैं ।।

रेखता

तुही हूर तुहीं नूर तुहीं है पीर पैगंबर ।। तूहीं सिंह तुहीं शाह हंस तूही है सरवर ।। मच्छ कच्छ जल थल तुहीं ।। तेरा अन्त न पाया कहीं ।। बलबल कमाल इस खया लको एक नाम साहिब तुहीं ।। १ ।। मनीको मारके धनीको याद कर सदा तो यह रंग नहीं रहता ।। कहै कमाल कबीरका बालका धोयले हाथ दरवाय बहता ।।

कमालीकी कथा

एक रोज किसीके यहां लडकी मरगई ।। उस मंजलमें कबीरजी भी साथ गये ।। लडकीवालेसे कहा कि यह मुर्दा लडकी हमको दो उन्होंने न दी । जब लडकीकी मांने सुना तो कहा ।। यह मेरी लडकी पीर कबीर जिन्होंने कमालको मुरदेसे जिंदा किया है उनके पास भेजदो । उस औरतने वरजिद्द होकर वह मुरदा लडकी

कबीरजीके पास भेजदी, कबीरजीने लडकीको शब्दसे चैतन्य किया ।। और नाम कमाली रक्खा ।। लोईको दी उसकी छातीसे दूध उतर आया जैसे कमाल साहिबके वास्ते उतरा था ।

कमाल और कमालीको लोईने पाला वेभी कपडेका काम करतेथे ।। और लोईको मांके समान जानतेथे ।। कबीरजीको तीनों स्वामीजी कहकर पुकारते थे ।। अनजान लोग जिनको यह भेद मालूम नहीं था, सो कबीरजीको गृहस्थ कहते थे । और अबभी बहुतसे लोग यही कहते हैं, कि कबीरजी घरवारी थे ।।

सा०–कबीर हम घर जालियां, अपना लिया मुण्डाहाथ ।
अब घर जाकू नासका, जो चलै हमारे साथ ।।

बहुतसे लोगोंने अपने मनसे झूठी उत्थानिका उठाके शब्दोंके अर्थोंको कुछका कुछ कर दिया है । कहीं २ मैंने यह लिखा हुआ देखा है कि कबीरजी लोईको कांधे पर उठाके बारिशमें बनियेकी दूकानपर ले गये, और कमालीके साथ चोरकी जान बचानेको चोर सुलाया यह सब कपोल वाद हैं, कहीं कबीरजीके शब्दोंमें इसका जिक्रभी नहीं है ।। जिस जिसने इसको बेखबरीसे लिखाहै सो सब झूठ समझना चाहिये ।। भक्तमालमें लिखाहै, कि पीपाजी जो कबीरजीके छोटे भाई थे, वे अपनी सीता नाम्नी स्त्रीको रातके समय अपने कांधेपर उठा कर लेगये ।। और गुसाई गरीबदासजीकीवाणीमें लिखा । कि, तुलसी भक्तने चोरकी जान बचानेको पुत्रीके ढिग सुलाया था ।। जब कमाली बीस बरसकी उमरमें हुई तब ऐसा इत्तफाक हुआ एक रोज कुएँ पर जल भरतीथी इतनेमें एक पंडित हरदेव नाम । वहां आया ।। और कमालीसे कहने लगा हे सुंदरी ! जल पिलादे उसने पिला दिया, जब उसकी प्यास बुझी तब पूछने लगा कि तू किसकी कन्या है, उसने कहा जुलाहाकी तब पंडितजी विस्मित भये, और खफा होकर कहने लगे कि तैंने मुझको जातिसे हीन किया

है ।। कमालीने कहा मैं कुछ नहीं जानतीहूँ तुम स्वामीजीके पास चलो तब फिर दोनों कबीरजीके पास आये पंडितजीने अभी हाल कहना शुरू किया ही था कि कबीरजी सब माजरा जानगए, और गौरीराग गाने लगे ।।

शब्द ।। ७१ ।। राग

पंडित बूझ पियो तुम पानी । तोहे छूत कहां लपटानी ।। टेक ।। मच्छ कच्छ या जलमें व्याने रक्त जेर जल भरिया ।। खार पलास सभी बहि आये, पशु पानीमें सरिया ।। १ ।। छपनकोटि यादव संहारे परे कालकी घाटी ।। पैंड पैंड पैगम्बर गाडे तिनका सडि भै माटी ।। २ ।। ता माटीका भाँडा घडिया तामें भरिया पानी ।। सो पांडे तुम पानी पीया सूग कहांते आनी ।। ३ ।। हाड झरे झर मांस गरे गर दूध तहांते आयो ।। सो पांडे तुम पीवन बैठे काहे दोष लगाया ।। ४ ।। बुनो जोलाहे तनो तनो जोलाहे पान जोलाहे लाई । पांचों कपडे उतार धरे तुम धोतीमें सिध पाई ।। ५ ।। जो माखी विष्ठाको भखती भखती दस्ती घोरा । सो माखी उड पातल बैठी ताको करो नबेरा ।। ५ ।। कहैं कबीर सुनो हो पांडे छांडो मनके भर्मा । वेद कितेब दोऊ महिडारो रहो रामकी शरना ।।

पंडितने जब यह शब्द सुना तो निश्चय किया कि, कबीरजी साहब पूर्णब्रह्म हैं चरणोंपर गिरके कहने लगा हे स्वामीजी । आजका दिन बहुतही उत्तम और पवित्र है जो मुझ ऐसे अज्ञानीको आपके दर्शन हुए ।। अब मुझको कुछ उपदेश किया ।। और कमालीके साथ उसका गंधर्व विवाह करदिया ।।

जो सन्तान उनसे उत्पत्ति हुई उनको कबीरवंश कहते हैं ।। पूरा २ हाल कबीरपंथी और कबीरवंशियोंका कथाके अन्तसे कुछ थोडासा पहले लिखाजावेगा ।।

सिकन्दर लोदीका काशीमें आना । और वेश्याको कबीरजीका लेजाना, और पंडेका पांव बुझाना, और बावन लाख वाणीका तुत्राना

और लोदीके दरबारमें जाकर लोगोंका बहस होना ।। और चेलोंका दिल फिरना थोडेसे लोगोंका कायम रहना ।। और वीरसिंह बघेला रानाका शिष्य होना जलमें डुबाना आगमें जलाना हाथीके आगे गठडी बांधके गेरना, सिंहरूप बादशाहको दिखलाई देना, काजी और पंडितोंका हारना लिखते हैं–

१५४५ कें सालमें सिकन्दरलोदी वहलोलका बेटा इब्राहीमका बाप काशीमें आया, उस समय बहुतसे राजे काशी सेवनको आये हुए थे और बीरसिंह बघेला जौनपुरसे आया हुआथा, कबीरजीसे बहुत प्रेम रखता था, जब कबीरजी जाते तब गद्दी छोडकर खडा होजाता था । फाल्गुन सुदी पूर्णमासीको कबीरजी एक बगलमें तो रैदास भक्तको । और दूसरीमें वेश्या, हाथमें चरणामृतका शीशा लेकर बाजारके रास्तेसे बादशाहके दरबारकी ओर चले हुएथे । रास्तेमें लोग राखऔर मिट्टी कबीरजीके ऊपर फेंकने लगे और कहने लगे अरारारा ।। झरारा सुनो हमरी कबीर । जब यह हालत कबीरजीकी लोगोंने देखी, तब जो बाणी बावन लाखके बावन ग्रंथ रचे हुएथे, सो सब गंगाजीमें लेजाकर डुबा दिया ।। जब यह खबर स्वामीजीने सुनी तो बडा अफसोस किया ।। अच्छे लोग सब सुनकर विस्मित हुए, उसी रूपसे दरबारमें गये । तब बीरसिंहके पास जाकर खडे हुये । तो राजाका दिल कबीरजीकी तरफसे फिर गया ।। कुछ उनकी तरफको मुतवज्जह नहीं हुआ ।। तमाम दरबारके लोग कुछ २ नालायक बातें कबीरजीको कहने लगे । और बादशाह भी इस हरकतसे नाखुश हुये ।। मगर होरीका दिन समझके चुपरहे ।। कबीरजी हरी हरी करके बैठें उसी बख्त हडबडाकर राम राम कहकर खडे होकर चरणामृतका शीशा अपने चरणोंपर उलटकर उलटें फिरे तब बीरसिंह वघेलाराणाने कहा कि, यह क्या किया है ।। रैदासने कहा कि, जगन्नाथके पंडेका पांव अटका उतारते बख्त जला है । सो बुझाया है इस बातको सुनके किसीने विश्वास नहीं

किया ।। उसी समय पत्री एक तो बादशाहके यहांसे, दूसरी राणाबीरसिंहके यहांसे लिखीगई ।। बीरसिंह वघेला राणाने कहा, क्या यह बात सच होगी ? तब एक संत जो उस जगह बैठे थे बोले" छाके अनछोकेंही डोलै दास कबीर मिथ्या नहीं बोलैं" सांडनी सवार तब पुरीमें पहुँचे तो उन्होंने पंडोंसे दरयाफ्त किया किसी पंडेका पांव जला है ।। उन्होंने कहा हाँ जला है वहांसे उत्तर लेकर जब लौटे तब राजाको इत्तला हुई कि, जरूर पंडेका पांव कबीरजीने बरफके पानीके साथ शर्द किया ।। राजाको परतीत भई रानीको संग लेकर कबीरजीकी कुटीपर पहुँचके शिष्य भया, सारा कुटुम्ब चरणोंमें पडा ।। कबीरजीने सत्यनामका उपदेश कर राजाको बिदा किया, कबीरजीकी और राजा रानीकी कथा बहुत है । वह कबीरसागरमें मिलेगी । दूतने शाहको जब कुल हाल सुनाया तो बादशाहने सुनके बडा ताज्जुब किया ।। तब शाहके पीर शेखतकीने कहा कि, उसके आग यह तो कुछ भी बात नहीं है ।। उसने एक लडका और एक लडकीको मुरदेसे जिंदा किया और लोई जो एक बंध्या है, उसकी छातीसे दूध उताराहै ।। और एक २ दिनमें कई २ रूप बनता है दावा खोदाईका करता है । उसको वह सजा होनी चाहिये जो मनसूर और शमशतबरेजको हुईथी ।। इतनेमें बहुतसे लोग मय माई नीमाके हिंदू मुसलमान नालिशी हुए ।। दिनमें मशाल बारके माताने बादशाहके आगे फरयाद की ।। तेरे राज्यमें अंधेर है कबीर मुसलमान होकर कंठी तिलक लगाता है ।। सबने कहा यह बात बहुतही विपरीत है ।। बादशाहने बहुतसी नालिशें जब सुनीं तो क्रोधित होके कबीरके पकडनेको अहदी भेजे । फजरके गएहुये कबीरको शामके वक्त दरबारमें लाये ।। कबीर आनकर चुपचाप खडे होगये ।। जब काजीने कहा अरे काफर ! सलाम क्यों नहीं करता ।।

दोहा–कबीर तेई पीर हैं, जे जानें परपीर ।।
जे परपीर न जानहीं, ते काफर बेपीर ।।

मुझको सलाम करना नहीं आता है । बादशाहने कहा कि तुमको फजरके वख्त बुलाया था अब तुम शामके वख्त आये, इसका क्या सबब है ? कबीरजीने जबाब दिया कि, एक तमाशा देखताथा ।। शाहने कहा ऐसा क्या तमाशा था, जो हुक्म अदूल करके उसको देखने लगा, कबीरजीने कहा एक ऐसा तंग रास्ताथा जैसा सुईका नाका उसमें कई हजार ऊंटोंकी कतार जाती देखी, तब बादशाहने कहा कैसी झूठी बात बोलताहै ।। कबीर झूठ नहीं बोलिये जबलग पार बसाय । ना जानों क्यों होयगा तिलके चौथे भाय ।। कबीर बूंद समानी समुद्रमें जानता है सब कोय ।। समुद्र समान बून्दमें बूझे विरला कोय ।। ऊपरकी दोऊ गई हियकी गई हिराय ।। कहें कबीर जाकी चारों गई तासों कहाबसाय ।।

शाहने कहा हमको कैसे जानपडे ।। तब कबीरजीने कहा ऐ शाह ! तू देख जमीन और आकाशकी दूरी ।। और चाँद सूर्यकी इतने अर्ज तूलके अन्दर कितने ऊट और हाथी आदि अनेक जन्तु जाते आते हैं ।। वे सब तुम्हारी आंखकी पुतलीके अन्दर बसते फिरते हैं ।। आंखकी पुतली तो सुईके नाकेसे भी बारीक है शाहने मान लिया और सलाम किया ।। और कहा अब आप जावो जो कुछ होगा फिर देखा जावेगा ।। लोगोंने कहा बादशाहने हमारी फरयाद नहीं सुनी, शेखतकीने कहा यह बहुत बेशरा है ।। ब्राह्मणोंने कहा यह अधर्मी है, बेपता सर्वंगी है । जो वेश्या और रैदास चमारके साथ लेकर दरबारमें आयाथा, बादशाह और लोगोंसे कुछभी शक नहीं की ।।

बादशाहने फिर बुलाके कबीरजीको कहा कि, आपकी निस्बत-लोग ऐसाकहते हैं ।। कबीरजीने वह शब्द कहा–

राग गौरीका ३ तीसरा शब्द ।। जब हम एके एक कर जानियां । तब लोगह काहेदुख मानियां ।। हम अपत आपती पत खोई हमरे

खोजपरो मति कोई ।। ।।टेक ।। हम मंदेमन्दे मनासाहीं । सांझ प्रात काहूसों नाहीं ।। पत आपत ताकी नहीं लाज ।। तब जानोगे जब उघरैंगो पाज़ ।। कहै कबीर हरिपति परबान ।। सर्व त्याग भज केवलराम ।। कबीर अबलग तो आछी निभी एक सोच रही मनमाँह।। जब जी यमके बशपरे तब पत रहेकनाह ।। फिर कबीरजीको कहने लगे तू मुसल्मान क्यों नहीं होता तब कबीरजीने यह कहा दोहा--कबीर सब घट मेरा सांइँयां, खाली घट नहीं कोय ।

बलिहारी उस घटके, जा घट परगट होय ।।

सब घटमें एकही आत्मा है एकसे दूसरेमें जाकर क्या होगा, फिर काजीने कहा कि, तू एक अदनासा जोलाहा होकर अपने आपको कबीर कहता है ।। यह नाम तो खुदाका है । फिर बादशाहने कहा तू अपना असली नाम बता, तब कबीरजीने कहा कि, मेरा नामहै सो सुनो ।। शब्द । मेरा नाम कबीरा हो सकल जग जाहरा ।। टेक ।। तीन लोकमें नाम हमारा आनंद है अस्थाना ।। पानी पवन सुमेर समाना यह विधि रच्यो जहाना ।। टेक ।। अनहद लहर गगनमें गरजे गाजै बाज सोहंताली ।। ब्रह्मबीज हमहीं परकाशा हमहीं अजब खयाली ।। टेक ।। यमबंधनते लेवौ लडाई निर्मल करौ शरीरा ।। सुर नर मुनि कोई अंत न पैहै ऐसे संत गँभीरा ।। टेक ।। वेद कतेब कोई पार न पैहै ऐसे मतिके धीरा ।। कहै कबीर सुनो सिकंदर दोनों दीनकी पीरा ।। जब तू ऐसा ऊंचा बोलताहै । तो जरुर लोगोंका कहना सच है ।। साल १५४५ था सेखतकी और काजी ब्राह्मण जो बादशाहसे दरपै सजा देने कबीरजीको जो हुये ।। तब बादशाहने कबीरसे कहा कि, अरे दोजखी अब भी समझ नहीं तो दोजखमें जायगा ।।

दोजख परैं तुरक और हिंदु ।। काजी ब्राह्मण सबही भोंदु । इतनी कहतेही कबीरजीके गलेमें तौंक पगमें बेडी डालकर हाथमें हथकडी भी लगादी ।। जब एक किश्ती पत्थरोंसे भरवा कर गंगाजीके

धारमें लेजाकर डुबोने लगे तब कबीरजीने अपना रूप बालकका बना लिया ।। बादशाह तथा और लोग जो देखने लगे.तो क्या देखतेहैं । किश्ती डूबने लगी और कबीरभी साथही मंझधारमें लोप होगये ।। तमाम लोग खुश हुए जो उस वक्त उनके विरुद्ध थे । और जो संतजन नेक थे, वे रोने लगे ।। फिर देखते क्या हैं, कि जलमें उलटे चले जाते हैं अर्थात् जिधरसे गंगाजी आतीहैं इधरको मृगछाला-पर बैठे चले जाते हैं लोगोंने शाहके पास जाकर कहा कि, अबकी दफा इसको आगमें फूको इस दफे कबीरजी जवान नजर आए ।। एक छप्परमें कबीरजीको बंद करके आग लगादी ।। जब आग लगी तब कबीरजी अग्नितत्त्वमें अग्नितत्त्व होकर बैठगये जब आग शरद हुई तब कबीरजी बडे सुन्दर स्वरूप होकर उसमेंसे बाहर आए ।। तब लोगोंने शोर वो गुल मचाया कि, यह काफर तो बडा जादुगर है ।। कहने लगे—

नाटक चेटक जुलाहाजाने । शाहसिकंदर तू मत माने ।। इसको मस्त हाथीसे मारवाडालो, यह कहतेही शाहने गठडी बँधवाकर कबीरजीको मस्त हाथीकेआगे फेंका ।। हाथी चिग्घाड मारके भाग गया ।। महावतने कहा ऐ बादशाह सलामत ! इस मोटके आगे तो शेरबब्बर खडा है ।। यह सुनकर बादशाह खफा हो आप सवार होकर जो पेलने लगे तो जरूर एक सिंह आगे खडा देखा, उसके चरणों पर गिरा और कहा कि जो कुछ खता मुझसे हुई सो मुवाफ करो और आप जो चाहो सो मुझको दण्ड करो । कबीरजीने कहा कि—

साखी—जो तोकों कांटे बोवे, वाकों वो तू फूल ।।
तोकों फूलके फूल हैं, वाकों शूलके शूल ।।

हाथी तीन दफे पेला कुछ न हुआ ।। एक होरी जो धर्मदासजीने कही है । ऐसो नाम उजागर होरी खेलन आये ।। अगम अपार परम सुखदायक, अवगतसो चले आये ।। टेक ।। काशीमें प्रगटे दास

कहाये नीरूके गृह आये ।। रामानन्दके शिष्य भये भवसागर पंथ चलाये ।। १ ।। काशीमें हांसी करवाई गणिका संग लगाई ।। हरिके पंडा जलत उबारे अपने चरण जल डारे ।। २ ।। शाह सिकन्दर जलमें बोरे बहुरि अग्निपर जारे ।। मस्त हाथी आन झुकाये सिंहरूप दिखलाये ।। ३ ।। निर्गुण कथैं अभयपर गावैं जीवनको समझाये ।। काजी पंडित सभी हराये पार कोऊ नहीं पाये ।। ४ ।। जो जो जीव शरणागत आये सोई २ सुख पाये ।। साहिब कबीर मुक्तिके दाता हंसालोक पठाये ।। ५ ।।

गुसाई गरीबदासजीके भक्तमाल शब्दोंमेंसे प्रमाणके वास्ते लिखते हैं ।।

।। १०४ ।। साहिब जुलहदी अलहका स्वरूप ।।
काशीनगर बीच आये अनूप ।।
।। १०५ ।। जडे तौक़ बेडी गलेमें जंजीर ।।
लोदी सिकन्दर दई है जु पीड ।।
।। १०६ ।। डारे गंगा बीच हुए खडे ।।
राखनहार समरथ तौक बेडी झडे ।।
।। १०७ ।। हाथी खूनी बेग लीना बुलाय ।।
मुसक बांध डारि या हाथीके पाय ।।
।। १०८ ।। हाथी दरशसिंह दरशन दयाल ।।
करन शकरी देख बका नवाल ।।
।। १०९ ।। पीलवानको आन दीना दीदार ।।
हाथी उलट मोड लीना सहार ।।
।। ११० ।। कहता सिकंदर झुकाओ जा फील ।।
करो बेग तडपड लगावो न ढील ।।
।। १११ ।। देख्या सिकन्दर दिवाना जो सिंह ।।
आये चितानंदला कोट रंग ।।
।। ११२ ।। डंकार गूंजे चले भाग फील ।।

देखा सिकन्दर दसंध्यानलील ।।
।। ११३ ।। चरण धोय पीये सिकन्दर सिताब ।।
तुही अर्शमक्का तुही है किताब ।।
।। ११४ ।। दिन एक दशमें बुझाया पंड पाय ।।
अटका पडा फूट कीन्ही संहाय ।।
।। ११५ ।। बोले सिकन्दरसे हर कौन कीन ।।
पहुँचे जगन्नाथ पंडा अधीन ।।
।। ११६ ।। लोदी सिकन्दर गया दूत पास ।।
कैसे बुझाया पाँव कहिये बिलास ।।
।। ११७ ।। अटका परा फूट सुनिये वसेख ।।
पहुँचे कबीर जु साहिब अलेख ।।
।। ११८ ।। जलहीम डारा जु शीतल शरीर ।।
पहुँचे जगन्नाथ साहिब कबीर ।।
।। ११९ ।। दिन एक दशमें किया है अजाब ।।
भरा है गंगोदक कहें हें सराब ।।
।। १२० ।। वेश्या बसै एक सुन्दर स्वरूप ।।
गए पीर मुर्शद लई संग अनूप ।।
।। १२१ ।। आशिक माशूका सतगुरु कबीर ।।
गले बाँह वेश्या धरै कौन धीर ।।
फिर लोग कहने लगे की–

दिन दश भक्ति कबीरा कीना । ये देखोसँग गनिकालीना ।भक्ति किया चाहे सब कोई । नीच जाति पै भक्ति न होई

बादशाह तो मुल्कगीरीमें मशगूल हुये और संतलोग कबीरजीके पास आने जाने लगे । यहांतक कि, पहलेसे भी जियादह हजूम होने लगा ।। ब्राह्मण वा कोता अक्लके लोगोंके दिलमें लहरें उठने लगीं कि, इस जुलाहाको किसी तरह शहरसे बाहिर किया जावे । चार ब्राह्मणोंका शिर मुंडवाकर यह समझादिया कि फलाने महीनेकी

फलानी तिथिको कबीरजीके यहां भंडारा है तुमको जरूर चलना होगा । सबको झूंठे पत्र देकर बिदा किया उन्होंने बाहर जाकर दो चेले हर एकने किये द्वादश ब्राह्मणोंने देशान्तरोंमें जाकर झूंठे दल देने शुरू किये लोगोंने और संतोंने शिर मानके लिये थोडी मुद्दतके बाद सन्तोंकीजमातें आने लगीं ।। जब भेषोंको आते दारैसजीने देखा तो कबीरजीके पास जाकर कहा कि, अब आप काशीमें नहीं रहसकेंगे लाखों सन्त आपके यहां आते हैं ।। एक सन्तने कबीरजीसे पूंछा कि, कबीरजीका घर कहां है ? कबीरजीने जवाब दिया कि सब जगह है । जो जो संत आते उनको पंडित लोगोंने उतारना शुरू किया । इतनेमें कबीरजी वहांसे उठकर ढोलक तँबूरा साथ लेकर एक जंगलमें जाकर गानेलगे ।।

राग गौरी ।

।। ११३ ।। अब मोहिं राम भरोसो तेरो ।। और कौनको करौ निहोरा ।। टेक ।। जाके राम सरीखा साहबि भाई सो क्या अनत पुकारन जाई ।। १ ।। जाके शिर तीन लोकको भारा सो क्यों न करे जनका प्रतिपारा ।। २ ।। कहैं कबीर सेवो बनवारी ।। सींचो पेड पीवें सब डारी ।।

भक्ति अंग दिखायके ऐसे गाये कि, सत्य लोकमें टेर पहुँची जुलहदी जंगदु हूं दीनमें रोपया तहां नौलाख बोडीउपाई ।। कस्द कैसो कैसो किया हुक्म कबीरसे आन जौनार काशी जमाई ।। लाए तार लौलीनहो ये रूप विहंगम माह ।।
गरीबदास जुलहा गया अगमपुरी निजठाँह ।। जरद श्वेत । अरु हरे नग बोडी भरी अनन्त ।। गरीबदास ऐसे कहा लेवो कबीर भगवंत ।। बिनाय काया पकरहा उतरे असंखमीर ।। गरीबदास मेला शुरू जेजै होत कबीर ।।

कई आदमी कबीरजीको तलाश करके मकानपर लाये बादशाह फिर काशीमें आए भंडारेका शोरसुनकर ताज्जुब करने लगे ।।

लाखों आदमी जो देखे तो बहुत फिक्र किया ।। ऐसा न हो कि, कुछ मुल्कमें फतूर मचे बंदोबस्तके वास्ते काशीमें मय लश्करके ठहर गये ।। ब्रह्मवेदीमेंसे ।। ४४ ।। अजामिलसे अधम उधारे पतितपावन बिरदतास है ।। कैसा आन भया वनजारा षटदल कीनी हास है ।। ४५ ।। धनाभक्तका खेत निपाया माधो दई सकलात है ।। पंडा पांव बुझाया सतगुरू जगन्नाथको बात है ।। भक्तहेत कैसो बनजारा संग रैदासकमालथे ।। हेहर हेहरदोती आई गोन छुई और पालथे ।। ४९ ।। गबखियाल विशाल सतगुरु अचल दिगम्बर थीर हैं ।। भक्तिहेतु काया धरि आये अवगत सत्य कबीर हैं ।।

अरिल

के सो नाम कबीर खुलासा फिरत है ।। अनन्त कोट संग बीडी बादल डुरत हैं ।। अजर मुनक्का दाख छुहारे छोतके ।। कैसो संग बनजारै एकै गोतके ।। पीतांबर पहरान सुरोंको सैलरे आए काशी-धीम लादकर बैलरे गेहूँ चावल चून मिठाई दालरे ।। घृत सहित पकवान धरी जहां पालरे ।। शाहसिकंदर सुनकर मेले आइया ।। हरिहांमहबूब कहता दासगरीब भेद नहीं पाइया । बादशाहने कबीरजीसे कहा चलो मेला देखे देखैं कैसा है ।। जवाब—एक चदरी एक गुदरी हमरे पाससे । हम नहीं निकसैं बाहिर होयगी हांसरे ।। शाइ सिकन्दर सुनकर जोरे जात है बोले माय कबीर यहां कुछ घात है ।। जहां शाह सिकंदर सत्यगुरुगोष्ठी कीनियां । तुम करता पुरुष कबीर तबै वह चीह्नियां ।। एक हलकारा आनतंम्बूमें लेगया । कैसौ और कबीरसों मेला देगया ।। तीन दिवस दरवेश महातम मालवै । गैबी फिरै नकीब कूचकर चालवै ।। गंग उतर कर गायक हुए दल भिन्नरे ।। कहां गये बनजारे बोडी अन्दरे ।। केशव और कबीर मिलत एको भए । हरिहां महबूब कहता दास गरीब तकी रोवदहे ।। शाह सिकन्दर चरण जुहारे जानकर । तुम करता पुरुष कबीर बसोडर आन कर ।। तुम खालक सर्वज्ञ स्वरूप कबीर है ।

हरिहां महबूब कटता दास कबीर पीर शिर पीर हैं । मारु ।। सतगुरु आदिभक्ति उपराजी हो । वेदकितेब करनी दिसमें झगरै पंडित काजीहो ।। टेक ।। रंजबूपशहर सब दुनियां कोई न तासों राजी हो । ऐसा ज्ञान अमान तासुका किया जगत् सब माजीहो ।। षट्दर्शन और दुहूदीनका अन्दर हिरदा दाझीहो । सारी सृष्टि इष्टिको निंदै सब दोसखके सा झीहो । हाफत हेत कुहेत करत है पीरमलाने हाजी हो ।। राम नामकी निन्दा करके बूडत हैं सबवाजी हो । ज्ञान तुरंगमके कसबारा चढै कबीराताजीहो ।। यह संसार पार नहिं पावे सतगुरुके पाती हो । अनंतकोटि युग बूडत होगये झूठे गुरुवा काजी हो ।। दास गरीब नहीं कोई सरवर चढै कबीर साजीहो । सतगुरु भगत अनाहद लायेहो । अलल पंख होय किया पियाना गगन मंडलकूं धायेहो ।। टेक ।। नाद बिंदु सिंधु बिन सरवर जहां उहां हंस चुगाये हो ।। लुब्धी भँवरे उजल अनुरागी कमल ध्यान बिरमाएहो ।। अधरचंद जहां अधर कमोदन देखत कबों न धायेहो ।। सूरजमुखी शंख सरवरमें मानकहंस अचायेहो ।। ४ ।। अधर अलग मगहै हमारा पंथी पंथ न पायेहो ।। मादर पिदर नहीं सतगुरुके ना वे जननी जायेहो ।। ५ ।। अधर अमान ध्यान धर देखो नाकहि गये न आयेहो ।। है अनुरागी लख बडा भागी पूजत नहीं पुजाएहो ।। ६ ।। अरेशमाह खटकून खयालहै दीख नहीं दिखायहो ।। अर्धचंद्र अंकुशहै स्थिर मौज मेहरसे आयेहो ।। ७ ।। रौनक रूप आईना असली माथ मुकुट दरशायेहो ।। दासगरीब कबीर मेहरसौ फूलमाल पहरायेहो ।। शब्द ।। काशीमें कैसो कबीर भए कलिके भवभार उतारनको ।। काम क्रोध अहंकार बली तिनते निजहंस उबारनको जिन आनके शरणगही उनकी तिनते संशय सब टारनको ।। देउपदेश पवित्र कए जनके दुख दोष निवारनको ।। सत्य नामको डंकबजायदियो हरिदासके कार्यसारनको ।।

यज्ञका होना तमाम भरतखंडमे विदित है ।। नीरू और नीमा तो इसी साल मुक्तिको प्राप्त हुए ।।

आगे हाल गोरखनाथके मिलनेका चला ।। नौलाख चौरासी सिद्ध बावन बीर चौंसठ योगिनीको साथ लेकर गोरखनाथ नाम योगी गिरनारसे कबीरजीका हाल सुन कर चला जब काशीमें आया तब सीधा रामानंद स्वामीकी सभामें जाकर त्रिशूल धरतीमें गाडकर त्रिशूलके ऊपर जा बैठा । और स्वामीजीसे कहा कि जो कोई वैरागी आपके भेषमें दूसरे त्रिशूलपर बैठ सके तो यह खडी है आवे, वरनै सबके कान फाडके योगी बनालूंगा ।। यह बात सुनकर रामानन्दजीतो अपने अन्तर्धान होकर देखनेलगे चारों सम परदाके सन्त बैठेहुये थे सबके आसन नीचे दीखे ।। गोरखनाथका आसन सबते ऊंचा । जब और सुरतीको ऊपर लेगये तब कबीरजीकी सभा देखी ।। जिसका सबूत नाभाजीकी वाणीसे हो सकता है ।। जो कुछ नाभाजीने अपने मुखसे कहाहै सो लिखते हैं ।। अनन्त कोट निज भक्त हैं तामें एक करोड लाख लाख नेजाधरी समर्थ सहससौ तामें अधिकारी पचास भक्तपरसिद्ध पचीसों परम उजागर । द्वादश भक्त प्रमाणा षट्रस गुणके आगर ।। चतुर भक्त गोविन्ददरश उभै भक्त तारण तर ।। तामें मुख्य कबीरहैं तापदकी नाभा शरण ।। वाणी अरबो खरबहैं । ग्रंथन कोटहजार ।। करता पुरुष कबीरहै । नाभो कियो विचार ।।

जब स्वामीजीने ध्यानमें यह रचना देखी तो कबीरजीको याद किया जब नेत्र खुले तब देखते हैं कि कबीरजी आगे खडे हैं ।। स्वामीजीने कबीरजीसे कहा कि नाथ आये हैं ।। इनकी खातिरजो कुछ बनपडे सो करनी चाहिये ।। कबीरजीने नाथजीसे कहा कि चलो डेराकरो ।। नाथजीने कहाकि पहिले यहां अपने गुरुवोंको कहो कि त्रिशूलपर बैठें या आपही बैठें ।। तब कबीरजीने यह कहा अयनाथ त्रिशूलपर या बाँस बरत्पर तो नटभी चढसकते हैं मैंने । आपके वास्ते आसन अधरमें बिछाया है ।।अगर आप उस पर बैठसकेंगे तो जो आप कहेंगे सो हम सब करेंगे ।। इतनी कहकर कबीरजीने एकनलीमेंसे

धागा निकालकर जमीनमें मेख लगाकर लिपटा दिया दुसरा शिरा उसका ऊपर को फेंक दिया । ऊपरसे आवाज आने लगीकि, हे नाथ आसन तैयार है आइये नाथजी हैरान होकर त्रिशूलसे नीचे उतर आये।। ड्योढीमें बैठकर गोष्ठी हुई जो बहुत है अगर लिखी जावे तो एकग्रंथ बनजावे फकत एकशब्दही लिखाहै ।। शब्द ।। साहिब कबीरतनाएक ताना ।। टेक ।। एक खूंटी धरनीमेंगाडी दूसरीले आकाशको जाना ।। टेक ।। ढीलभई पाई सूतउरझाना ।। ब्रह्मा बिष्णु महेश भुलाना ।। टेक ।। ताना तन सतगुरु घर आए ड्योढीमें बैठे गोरख समझाना ।। टेक ।। कहँहि धर्मदास सुनो भाई साधो बिनतबिनत अनमोल बिकाना ।।

।।टेक ।। नाथजीने कबीरजीको आदेशकिया और भेष उतारके चरणोंके ऊपररक्खा ।। टोपी कुपीन कुबरी झांडा झोरी साथ दिया भई कबीरकी चढाई गोरखनाथ ।। फिर बहुत अधीन होकर पूछते हैं कि हे कबीरजी ! आपकी उमरक्या है ? तब कबीरजीने जवाब-दिया ।। शब्द ।। जो बूझे सो बावरक्या है उमरहमारी ।। हमको सदा मालूम है खेलें युगचारी ।। टेक ।। कोटि विष्णुहो हो गये दशकोटि धना इया । अनंत कोटिशम्भु भयेमेरी एक फ्लाइया ।। कोटि ब्रह्म होगये महम्मदचारयारी ।। देवतनकी गिनती नहीं क्या है सृष्टिविचारी ।। टेक ।। नहिबूढा नहीं बालकानाहीं जगतभिखारी ।। कहहिंकवीर सुनो गोरखा यह है उमर हमारी ।। टोपी कुलीन झांडा झोरी भेषजीना शब्द कबीर तब गोरख कीन आदेशा ।। दोनों गोरख गोष्ठ हैं और एक समाज है ।। कबीरसागर और कबीर बाटिका में मौजूद हैं फिर थोडीदेरके बाद गोरखजीने कबीरजीसे नशामांगा आपके पास हो तो दो ।। कबीरजीने यह शब्द कहा । अलमस्तायोगी नाम अमल मद माता ।। टेक ।। तनकर कूंडी मनकर सोटा खोटो दिन और राता ।। जतन २ कर छान लेव तुग प्रेमकी साफीहाथा ।। रसनकटोरी भर २ पीवो पांचो इंद्री साथा ।।

टेक ।। रोम २ रंग भीनरहो है क्यासीलाक्याताता । गुरुका शब्द अग्निका किनका जब छेडातब जागा । शिरके सांटे भक्तिबकूली क्या तनकीकुशलाता ।। टेक ।। कहहिं कबीर मगन ह्वै नाचो क्या संध्यापरभाता ।।

ऐसे २ बहुत शब्द हैं । फकत थोडेही लिखते हैं ।। गोरख जी तो बंदगी करके चले गये ।। एक रोज पद्मनाभजी जो कबीरजीके परले चेले थे आए । दंडवत् देकरके अर्ज करने लगे कि, हे स्वामी ? जो आज एक कुष्ठी साहूकार गंजाजीमें डूबनेको गयाथा ।। ज़ब डूबने लगा तब मैंने जो शब्द हुजूरने मुझे जपनेको बताया है उस को तीनवार जपवाकर गोता लगानेको कहा ।। उसने तीनदफे राम राम कहकर जो गोता लगाया तो उसका शरीर उसी वक्त आपकी दयासे शुद्ध होगया जब यह बात पद्मनाभकी सुनी तो कबीरजीने कहा कि, अरे पद्मनाभ ? तुझको अभी रामनाम पर निश्चय नहीं हुआ है ।। एक कुष्ठीका कुष्ठ दूर करनेको तीनदफे राम राम कहलाया ।। रा उचरत अघपरि हरैं, कहो भाग कित जांय । जोमकार पढ मिलैतो अन्तर भस्म ह्वै जांय पद्मनाभजीको पहलेसेभी अधिकविश्वास हो गया ।। नामकी महिमा दिखानेकी प्रमान । नाम महा निधि मन्त्र नामही सेवा पूजा । जप तप तीरथ नाम नामबिन और न दूजा ।। नाम परतीस नाम वैर नाम-कहि नामहि बोलै । नाम अजामिल साख नाम बंधनते खोले ।। नाम अधिक रघुनाथसे राम निकट हनुमत कह्यो । कबीर कृपाते पद्मनाभ परमतत्त्व परचे लह्यो ।। तत्त्वाजीवा दो भाई ब्राह्मण दक्षिण देशमें नर्मदा नदीके किनारे गुजरातके जिलेमें रहते थे उन्होंने अपने आंगनमें बडका सूखा ठूंठगाडकर यह प्रण किया कि जिस महान् पुरुषके चरनोदकसे यह ठूंठ हरा होगा उसको गुरु धारण करेंगे । चालीस वर्ष तक हजारहों संतोंके चरण पखाल कर उस ठूंटको सींचते रहे परन्तु हरा न हुआ जब दक्षिण देशमें सन्तोंका निरादर

होनेलगा तो कई एक संत काशीमें कबीरजीके पास आये और यह सब हाल कहा कि, आपके होते संतोंका निरादर होता है । कबीरजीने कहा ।।

दोहा–कबीर–साधु हमारी आतमा, हम साधुनकी देह ।
साधुनमें हम यों रहैं, ज्यों बादरमें मेह ।।

दोहा–कबीर–साधु हमारी आतमा, हम साधुनके जीव ।
साधुनमें हम योंरहैं, ज्यों गोरसमें घीव ।।

दोहा–कबीर-साधु हमारी आतमा, हम साधुनकेश्वास ।
साधुनमें हम यों रहैं, ज्यों फूलनमें बास ।।

संत कबीरजीके पाससे बिदा होकर दक्षिणको गये । छः मासमें जाकर पहुँचे जब उस स्थानमें गये तो क्या देखते हैं कि, कबीरजी सर्वांगरूप धारण करके टहल रहे हैं । जब उस ठूंठके पास होकर लखे तो संतोंने तत्त्वा जीवाजीसे कहा कि, एक साधु तुम्हारे ठूंठके पाससे होकर जाता है तुमने उसके चरण क्यों नहीं धोए हैं जब उन्होंने देखा तो कहा कि, अभी धोते हैं जाकर कबीरजीके चरनोंमें लिपटगये ।। चरण धोकर उस ठूंठके ऊपर जब वह चरणोदक गेरा उसमेंसे कोंपल निकल आए ।। तत्त्वा जीवाजीने कबीरजीको गुरु धारण किया

दोहा–गरीब–तत्त्वा जीवाको मिले, दक्षिणबीच दयाल ।
सूखा ठूंठ हरा हुआ, ऐसे नजर निहाल ।।

दूसरा प्रमाण नारायणदासजीकी भक्तमालके टीकामेंसे ।।

तत्त्वाजीवा भाई उभय विप्र साधु सेवापन मनधरि ।। वाकोइ शिष्य नहींभये हैं । गाडचो एक ठूंठ द्वार होय अहो हरि डार संत चरणामृत लेकै डारिनए हैं । जबहिं हरित देखैं ताको गुरुलेख आप श्रीकबीर पूजी आश आय पाँव लिये हैं ।। नीठि नीठि नाम दियो दियो परेचाय धाम काम कोऊ होय जोपै आओ कहि गए हैं ।।

कानाकानी भई द्विज जाति पांति गई पांति न्यारी करदई कोऊ बेटी नहीं लेत हैं ।। चल्यो एक काशी जहां बसत कबीर धीर जाय कही पीर जब कौन हेत है ।। दोऊं तुम भ़ाई करो आपसें सगाई होय भक्ति सरसाई न घटाई चित्त चेत है ।। आय वहै करी परीक्षा ज्ञात खर बरी कहैं कहा उर धरी कछू मितिहि अचेत हैं ।। करै यही बात हमैं औरना सुहात आये सबै हाहा खात यह छांडि हठ दीजिये ।। पूछिबेको फिरि गए करो व्याहु ओपै नए दंड करि नाना भांति भक्ति दृढ कीजिये ।। तब दई सुता लई पांतिन प्रसन्न ह्वैके पांति हरिभक्तिनसो सदा मति भीजिए । विमुख समूह देखि सुमुख बड़ाई करैं धरैं हिय मांझ कहैं प्रण पर रीझिये ।।

अबतक इस बडको "कबीर बड" कहते हैं, और सात हजार आदमी उसके साएमें आराम पासकते हैं भूगोल हस्तामलकमें इसका जिक्र है ।। अङ्गरेजकी चौथी किताबमें भी इसका लिखा है । समन भक्तकी कथा गरीबदासजीके ग्रंथमें मिलेगी ।। उसकी स्त्रीका नाम नेकी और बेटेका नाम सेऊ था । जब उनके घरपर कबीरजी गये कमाल वाफरीदाके गये । उस दिन उनके घरमें भोजन संतोंके देनेको कुछ था ।। सेऊने तीनसेर अनाज बनियांकी दूकानसे लिया । बनियांने पकड लिया समन उस अनाजको घरमें लाया उसकी औरत नेकी ने भोजन तैयार किया समनने फिर दूकानपर पहुँचाके सेऊका शिर काटलिया ।। और लाकर ताकमें रख दिया । जब रसोई तैयार हुई तो कबीरजीने छः पनवाडे बनाकर पारुस किए सेऊको पुकारा सेऊके शिरमेंसे आवाज आई कि, मेरा शिर कटा हुआ पडा है कबीरजीने आवाज दी कि, चोरोंके कटते हैं संतोंके नहीं क्योंकि वे साहदिबके नामपर कुरबान होते हैं । सेऊ उठकर पंगतमें बैठके जीमा यह बात गरीबदासके ग्रंथमें लिखी हुई है ।।

।। ३८ ।। गरीब–आवो सेऊ जीमलो, यह प्रसाद अति प्रेम ।
शीशकटत हैं चोरके, साधोंके नितखेमं ।।

।। ३९ ।। गरीब, सेऊ धडपर शिर चढचा, बैठे पंगति माहँ ।
नहीं धरहडा नाडके, अहो सेहुँ अक नाँहँ ।।

आगे कबीरजीके साथ जो गोष्ठी रैदासकी हुईहै उसमेंसे प्रमाण थोडासा लिखा है बहुतसा देखनाहोतो कबीरसागरमें मिलेगा । रैदास उवाच ।। माधव नाहिं हित मोरा । कैसेमें तोरा ।। कुकु मततनादल बादल फांदे, सुमति भई परकासा । हृदय ज्ञान ध्यानधर देखो, सत भाषै रैदासा ।। २ ।। कबीर उवाच ।। ब्रह्मज्ञान विन ब्रह्मध्यान बिन हृदय शुद्ध न होई ।। एकै ब्रह्मसकल घट व्यापक द्वितीय और न कोई ।। ३ ।। रैदास उवाच ।। नमो नमो निरंकार तोहिं नमो कृपालु कबीर । जन रैदास स्नानक साधु नदी हर नीर ।। यहश्लोक अतंका है ।। पहले दो आदिके झाली रानी चित्तौरगढकी कबीरजीकी शिष्य होनेको आई कबीरजी गुदडीमें गुड लगाकर बैठरहे । लाखों मांखी लगरहीं ।। रानीको श्रद्धा रही रैदासके ढाबकरकी छबि निहार रैदासकी चेली भई । रैदास पकरे गये हैं कबीर काशी शहर कौन सोखी शरीर पंडित पढै पाठ करतेजसेव।। जुलहे बुलाए पथरके जदेव तमाम काशीके पंडीत उस रोज हार गए और घरको उदास होकर चले गए । बादशाहने दोनोंको आदर सत्कारके साथ बिदा किया ।। रैदासने कबीरजीके चरणोंको दंडवत् की और कहा कि, आप साहिबरूप हैं इस दासको सदैव काल अपने चरणकमलोंके आश्रित जानियेगा ।

श्वपचरूपधर सतगुरुआये । पंडोजगमेंशंख बजाये ।। जलबूडे नहीं अनल जलाई ।। ताकीपूजा करोरेभाई ।। खड्ग बाणशस्त्र नहिंछेदं । ताकोकैसेपावेवेदं ।। वेदपुरानो लखा न जाई पंडित कहोकहांगणगाई ।। पिंडब्रह्मांड दुहूँतेन्यारा हदबेहदसे अगम अपारा ।। मायाके शब्दोंसे पहलेनानक बोध लिखताथासो भूलगयादूसरी पोथीमें जरूर लिखना चाहिये नानकका जन्म १५२६ में हुआ और १५६९ में देहांत बेई नदीमें गोतालाया ।। साल ।। १५५३ में उस-

वक्त २६ सालकी उमर थी नानकजीकी । और उस वक्त कबीरकी उमर ९८ वर्षकी थी ।। आगे माया छलनेको आई ।। तब कबीरजीने कहा हे माई ! अपने स्थानको चलीजा ।। मायाने कहा मुझको इंद्रने आपकी टहल करनेको भेजा है कबीरजीने कहा मैं गरीब जोलाहा हूँ किसी बड़ी जगहमें जा मेरे ढिग वैठकर लाजसे मरेगी मैं किसी संतके हवाले. करूंगा तो तू पानी ढोती ढोती मरेगी तू किसी तरहसे रह मैं तुझको खूब जानता हूँ कहने लगे अगर बहुत नहीं रखते तो दो चार रोज अपनी टहलमें रक्खो ।। कबीरजीने कहा कि, नारी तो नरककी निशानी है महाराज बोले कि, तू तुलसीकी माला पहनकर साहिबको यादकर थोडी देरके बाद माला पहनकर आई ।। तब कबीरजीने कहा कि, मैं तुझको खूब जानताहूँ ।। तेरे काबूमें नहीं आता हूँ अगर तू कंदका मृदंग बनावे और नीबूका मंजीरा और पांच तौरियोंको साथ लेकर खीरा नाचे और मंगल गावे तौभी हमतेरे फँदेमें नहीं आते हैं भला शोच तो सही कहीं भैंसका आशिक चूहा होसकता है ।। अगर मेंढक तो ताल बजावे और चोलना पहरकर ऊंटभी नाचे तौभी हम तेरे जालमें नहीं आते ।। यह जो तैंने तुलसीकी माला फरेब करके पहरी है इससे तुझको कुछ नफा नहीं मिलेगा और न हम इस फरेबसे तेरे काबूमें आवेंगे खयाल कर अगर मछली पेड चढकर फल तोडे और कछुवा उनको इकट्ठेकरे यह अयोग्य है यह हो तो हो पर हम तेरे मक्कर फरेबमें नहीं आते हैं ।। तू उस जगह जा जहां तेरी खातिर मांस मद्यादिक पदार्थोंसे होवे कलूके लोग कहते हैं । तैंने पहले जो लोग छले हैं मैं खूब जानता हूँ अय कबीर ! तुम नाहक मेरा नाम लेतेहो मैंने किसको गिराया है ।। भला एकका तो नामलो ।। अब कबीरजीने यह बात सुनके कहना शुरू किया ।। सुनु कुछ थोडेसे बोलता हूँ ।। १ ।। मार्कण्डेय ।। १ ।। शृङ्गऋषि ।। १ ।। भस्मासुर ।। १ ।। शंकर गोरख कच्छदेशमें ।। १ ।।

गौतम ।। १ ।। उसकी स्त्री ।। १ ।। चन्द्रमा ।। १ ।। इन्द्र ।। १ ।। अञ्जनी ।। १ ।। नारद ।। १ ।। गधी बनकर हमारे छलनेको आई फिर हमने तुझको निकाला अब फिर तू हमको छलने आई है तू देख अगर एक सुन्दर पिटारीमें काला सर्प डालकर उसको बन्द किया जावे और एक अनजान चूहा उसको देखके उसको काटकर अन्दर जावे क्या वह सर्प उसको नहीं खाजावेगा । अब बसकर हे माता ! पत्थर पानीमें कभी नहीं भीगता है माया हारकर चलीगई ।। जाकर इन्द्रसे कहा कि, कबीरके आगे कुछ नहीं चलती वह तो जगद्गुरु हैं मायाके ऊपर कबीरजीने बहुत शब्द कहे हैं । थोडेसे प्रमाणके वास्ते लिखे हैं ।। जो खुलासा पहले कहचुके हैं ।।

दोहा–कारी नागन विषभरी, बिषले बैठी हाट ।
पालेपरी कबीरके कीन्ही बारह बाट ।।

शब्द दूसरा ।। २ ।। ठगनीका नैना झमकावे कबीर तोरे हाथ ना आवे ।। टेक ।। काहू काट मृदंग बनावोनीबू काट मँजीरा, पांच तुरैया मंगल गावैं नाचे बालमखीरा ।। टेक ।। भैंस पद्मिनी चूहां आशिक मेंडक ताल बजावे । चोला पहर गधैया नाचे ऊंट बिष्णुपद गावे ।। टेक ।। रूपा पहरे रूप दिखावे सोना पहर रिझावे गले डाल तुलसीकी माला तीन लोक भरमावे ।। टेक ।। आम चढे मछली फल तोरै कछुवा चुन चुन लावे ।। कही कबीर सुनो हो संतो विरला अर्थ लगावे ।। टेक ।। शब्द तीसरा ।। ३ ।। मस्तानी धोबन हम जानी घूम घूगरूबजार दीवार ।। टेक ।। मार्कण्डेय लारे लागी शृङ्गीऋषिके रंगमें पानी नैनकी सैन चलावे शारदा भस्मासुर कियेछार ।। २ ।। टेक ।। नौनाथ पलकोंमें राखे सिद्ध चौरसी झुक झुक झाके उद्दालक ऋषि तिरियाके कारण गये ब्रह्म दरबार ।। मोहनी रूप धरा भगवाना शंकर हौद भरा हम जाना ।। कच्छ देश रत्नागर सागर दिया गोरख शिर भार । टेक । गौतमऋषिकी नारी अहल्या दिया शाप धोबन कर गलिया ।। शशि कलंक इन्द्रके सहस्र भग अंजनीके

पुत्र कुमार ।। टेक ।। साठ पुत्र नारदके कीने पुत्रहेतु बहुत दुख दीने चलत उडगई छार ।। टेक ।। खरका रूप धरा मृगनयनी ताना तोडा तब हम जानी ऊंचे चढ दामिनिसी दमकै सैन मिलागईबार ।। ।। टेक ।। काशीमें कीरति सुनि आई कहैं कबीर मोंहि कहा बुझाई गुरु रामनन्दजीके चरण कमल पै तैं धोबनदीनी वार ।। शब्द चौथा ।। मायामहाठगनी हमजानी त्रिगुणफांसलिये कर डोले बोले मधुरी बानी ।। केशवके कमला ह्वै बैठी शिवके भवन भवानी । पंडाके मूरति ह्वै बैठी तीरथहूँमें पानी ।। योगीके योगन ह्वै बैठी राजाके गृह रानी, काहूके हीरा ह्वै बैठी काहूके कौडी कानी । भक्ताके भक्ति ह्वै बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी ।। कहैं कबीर सुनो हो सन्तो ये सब अकथ कहानी ।।

लोग कहलगे कि, हे स्वामीजी ! यह तौ बहुत अधीनतासे आपके पासरहना चाहती है ।। कबीरजीने शब्दमें जवाब दिया ।। शब्द ।। ई माया रघुनाथकी बौवरे खेलन चली अहेराहो ।। चतुर चिकनियाँ चुनि चुनि मारे काहू न राख्यो नीराहो ।। मौनी बीर दिगम्बर मारे ध्यानधरते योगीहो । जंगलमेंके जंगम सारे माया किनहु न भोगी हो । बेद पढंते पांड़े मारे पूजा करते स्वामीहो । अर्थ बिचारते पंडित मारे बांधे सकल लगामीहो । शृंगी ऋषिवनभीतर मारे ब्रह्माका शिर फोरेहो । नाथ मछन्दर चले पीठसे सीगलहूँमें वोरेहो । सांकटके घर करता धरता हरिभक्तनके चेरीहो । कहैं कबीर सुनो सन्तो ज्यों आवे त्यों फेरीहो ।। कबीर मायामारमन मारिया, राखा अमर शरीर । आशा तृष्णा मारके थिर ह्वै रहे कबीर ।। । बीर ।। मोटीभाया सब तजै, झीनी तजी न जाय । पीर पैम्गम्बर औलिया, झीनी सबको खाय ।। कबीर माया जातहै, सुनो शब्द निज मोर । सखियोंके घर संतजन, सूमोंके घर चोर ।। कबीर जो धन संचिये सो आगेको होय ।। मूंड चढाया गाठरी, लेजात न देखा कोय ।।

जब कबीरजीके मगहर जानेमें थोडे दिन बाकी रहे तब सब सभाके लोगोंसे कहा कि, अब हम काशीको छोडेंगे तबलोगोंने अर्ज की सारी उमरकाशीमें कटीहै अब मगहरमें जानेको कहते हैं यह बात शास्त्रके विरुद्ध है कबीरजीने जवाब दिया । बीजकका तीसरा ३ शब्द लोग तूंही मतिको भोरा । जे वो पानी पानीमें मिलि गयो तें वों दूरी मिले कबीर । जो मैथीको सचावास ।। तो हरि मरन होई मगहर पास । मगहर मरों मरे नहि पावों । अंत मरो तो राम लजावों ।। मगहर मरे सो गदहा होई । भल परतीस रामकी खोई ।। क्या काशी क्या ऊपर मगहर जोपै राम हृदय बसै सोरा । जो कबीर काशी तनु तजै तो रामहिं कौन निहोरा ।।

इतिहास कमाल कमालीका

जब दो रोज जानेमें बाकी रहे तो कमाल वा कमाली वा हरिदेव-पंडित कहनेलगे । हे स्वामीजी ! आपने तो मगहरकी तय्यारी की है और हमारा क्या हाल होगा जो आपके ही आसरेसे रात दिन गुजर करते हैं कबीरजीने जवाब दिया हे कमाल ! लाल तेरे जो संत होवेंगे सो कबीर नामसे पुकारे जावेंगे ।।फिर कमाली तरफ नजर फेरकर जो देखा तो उससे कहा हे कमाली ! तेरी सन्तान भी कबीर नामसे पुकारीजावेगी । तब कमालीने कहाकि, हे स्वामीजी ! इन दोनोंकी पहचान क्या होगी ।फिर कबीरजीने फरमाया कि कमालके सन्त कबीरपंथी और तेरी औलाद कबीरवंशीके नामसे पुकारे जायँगे ।। उस वक्त कबीर दशहजार सेवक और सन्त जमाथे ।। चारों वर्णके ब्राह्मण बहुत थे ।। क्षत्री उनसे ज्यादह और वैश्य कुछ कम थे । शूद्र उनसे भी कमथे जो महाराजके दहनी तरफ गृहस्थ थे उन सबको यह आज्ञा हुईहै कि जो इस वक्त कमालीके साथ मिलेगा वह कबीरवंशी कहलाएगा जिनके दिलमें उस वक्त प्रेम हुआ वे मिलगये और नाम कबीरबंशी पाया देनलेन आपसमें जिनकी हुईहै वे कुल एकसौआठ (१०८) गोत्र हैं ।।

इतिहास मगहर जानेकी

मगहर काशीजीसे छह मंजिल है जिला गोरखपुर, बीरसिंह बघेला पहलेही अपने लश्कर समेत वहां पहुँच गयाथा और बिजलीखान पठान वहांका नव्वाब था उसने जब सुना कि, कबीरजी यहां आखीरका दिन करने आते हैं और वीरसिंह बघेला राणाभी उनका शिष्य है और मैंभी उनका मुरीद हूँ कबीर साहिब तो मुसल्मान हैं मैं उनको दफनाऊंगा ।। सुना है कि, राणाजी उनकी लाशको जलाना चाहते हैं । यह बात कभी नहीं होने दूंगा माघ सुदी एकादशी दिन बुधवार, संवत् १५७५ को काशीको तजकर मगहरको चले ।। काशीके लोग बहुत उदास होकर कहने लगे कि, आज कबीरजीके वगैर काशी सूनी नजर आतीहै । जैसे चांदके बिन तारे, तमाम काशीमें उस रोज अन्धेर होगया । सब लोग यह कहते थे कि हमारे भाग्य मंद हैं जो हमने ऐसे महापुरुषके वचनोंको नहीं माना । हाय अब क्या करें ? पीछेसे खराखोटा मालूम होता हैं, उसी वक्त मगहरमें एक छोटासा हुजरा किसी सन्तका था उसमें जाकर बैठगये वह कोठडा अमीनदी जो अब कहातीहै उसके किनारेपर था ।। वह नदी सूखीथी कमलके फूल और दो चद्दर मँगवाकर लेट गए सबको कहा कि ताला बन्द करदो ।। तब बीरसिंहने कहा ऐ साहिब ! आपकी अंतकी गति कैसी होगी मेरा इरादा है कि, आपके शरीरको अग्निमें प्रवेश करूंगा ।। बिजलीखां पठानने कहा कि, मैं कभी आपको ऐसी हरकत नहीं करनेदूंगा, तब कबीरजीने फरमाया कि कभी शस्त्र न चलाना जो मेरे वचनको मानेगा सो आनन्द रहेगा । सबने दंडवत् और बंदगी की । सबके दिलउदास होगये ।। तव कबीरजीने चलावेके शब्द जो कहे हैं सो पीछेसे लिखे जायंगे चद्दरको मुखपर लेकर कहने लगे कि, ताला बन्द करदो जब ताला बन्दहुआ उसवक्त एक ऐसी ध्वनि हुईकि, सबके दिलोंपर तासीरहोगई । जयजयकारहुआ सत्य-लोगको सिधारा । जब ताला खोला तो फकत कमलके फूल और

दोचद्दरही बाकीरहीं ।। एक चद्दररानाने उठाई मयफूलोंके और दूसरी पठानने, उसने जलाकर चौरा बनाया और बिजलीखानने कबर । एकमन्दिरमेंदोनों मौजूदहैं ।। मकरके महीनेमेंवहां मेला होता है । वहनदीजोसूखीथी उसीरोजसे उसमें पानी जारी है । उसीदिनसे उसका नाम अमी नदीहै ।। जो शब्द अन्तके समयपें कहेहैं वे ये हैं ।। रागगौरी ।। दुलहनीगावो मंगलचार ।। हम घर आए राजाराम भरतार ।। टेक ।। तन रतनकरहूँ मन रत करहूँ पाचों तत्त्व बराती । रामदेव मोरे पाहुन आए मैंजोबन मदमाती । शरीर सरोवरवेदीकरहु ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेवसंगभाँवरलेहोंध-निधनिभाग हमारा ।। सुरतेतीसोंकौतुकआए मुनिजनसहसअंठासी । कहैकबीर हम ब्याह चलेहैं पुरुष एक अबिनासी ।। ४५ ।। हमनमरी है मरि हैं संसारा हमको मिला जियावनहारा ।। टेक ।। अबनमरों मरनेमनमाना । तेईमुएजिनराम नजाना ।। १ ।। साकत मरैं संतजन जीवैं ।। भरि भरि रामरसायन पीवैं ।। २ ।। हरि मरि हैं तो हमहूँ मरि हैं, हरि न महि हैं हम काहेको मरि हैं ।। कहैं कबीर मन मनहिं मिलावा । अमर भए सुखसागर पावा ।।

रागधनाश्री ।। लोका मतिको भोरारे ।। जो काशी तनु तजै कबीरा रामहि कहा निहोरारे ।। टेक ।। तब हम वैसे अबहम ऐसे यहीजन्मका लाहा । ज्योंजलमें जलपैसन निकसेयोंदुरि मिला जुलाहा रामभक्तिपर ज्ञाकोहित चिततताको अचरजकाहा । गुरुप्रतापसाधुकी संगत जग जीतेंजात जुलाहा ।। कहतकबीर सुनोरे संतोभ्रममेंपरो-जनि कोई । जसकाशीतसमगहाऊसरजों हृदय रामसत होई ।।

गवाहीके शब्द ।। धर्मदासजीका शब्द । सतगुरुहंस उबारनजगमें आइयां ।। प्रगत भएनिजकाशीमें दासकहाइयां ।। रामानंद गुरु कीने सो पंथ चलाइयां ।। बुधि बलदाक्षी लीनबहुरि समझाइयां । ब्राह्मण और संन्यासीहांसीकीन्हा तजि काशी गए मगहर किनहूंना-चीन्हा । मगहरग्रामगोरख पुर सतगुरुआइयां ।। हिन्दूतुरक परबोधके

पंथ चलाइयां । बिजलीखान पठानसों कबरखुदाइयां । बीरसिंहबघेला राणा साज दल आइयां ।। मगहर झगरा लाए दोऊदल राखियां ।। गढबाँधोधर्मदास आपनकरथापियां ।। अटल बयालिसबंश राज्यलिख दीन्हा ।। जस हम तस तुम बंश दयाप्रभुकीन्हा ।। हदबांधीदरियाव-उड़िसेजाकर । लक्ष्मी सहित जगन्नाथमिलेप्रभु आयकर ।। पंडा-पाखंडनजानके कौतुककीन्हा । एकसे अनंतकलाधारकैदरशनदीन्हा ।। कहैं कबीर बिचार सुन धर्मन नागरा ।। बहुत हंसले संग उतर भवसागरा ।।

आरती धर्मदासकृत

आरतिसाहिब कबीरतुम्हारी । देहु दीदार जाऊं बलिहारी ।। टेक ।। पहली आरतीपोहमी आए । काशीप्रगटे दास कहाये ।। १ ।। दूसरी आरती देवल थपाए । आसारोप समुद्र हटाए ।। २ ।। तीसरी आरती चरणामृत डारे । हरिके पंडे जरत उबारे ।। ३ ।। चौथी आरती जल तत्त्व ह्वै धाए । तोडे जंजीर तीले आए ।। पंचम आरती अवगत ध्याए । मुरदासों जिन्दा करल्याए ।। ५ ।। छठवीं आरती कान्ह मंडल सिधाए । जनज्ञानीके संशय मिटाये ।। ६ ।। सतई आरती बलख सिधाए । लख चौरासीकी बन्द छुटाए ।। ७ ।। आठवीं आरती पीर कहाए । मगहर अमी नदी बहाए ।। ८ ।। कहँ लग कहूँ शोभा वरणि न जाई । धर्मदास आरती सजपाई ।। ९ ।। षट् दर्शन और भेष अलेखा । साहिब कबीर सबहीमें देखा ।।

रत्नबाई कृत स्तोत्र गवाही दूसरी

जैजैगुरु पीरं सत्य कबीरं अमरशरीरं अधिकारी । निगाँन निज मूलं अस्थूलं काटन शूलं भव भारी ।। सुरति निज सोहं कलिमल खोहं इच्छितदोहं छबि भारी ।। अंमरपुर बासी सब सुखरासी सदा बिलासी बलिहारी । पीरनको पीरा मतिको धीरा अलख फकीरा ब्रह्मचारी ।। हंसन हितकारी जग पगधारी गर्वप्रहारी उपकारी । काशीमें आए दास कहाए हंस उबारे प्रणधारी ।। रामानन्द स्वामी

अन्तर्यामी हैं बडे नामी संसारी । उनको गुरु कीन्हा बुध मत लीन्हा उनहुँ न चीन्हा करतारी ।। ब्राह्मण संन्यासी कीन्हा हांसी तब-अविनाशी पगधारी । मगहर अस्थाना किया पयाना देपरवाना जनतारी ।। तहां बलवीरा तजे शरीरा काटन नीरा भयभारी । वीरसिंहदेव राजा सुनबल गाजा सबदल साजा छबिभारी ।। वे तो पीरपठाना सुन बलठानालायक मानाकर डारी । सन्मुख नियराना छुटे न बाना भए घमसाना रणभारी ।। तब गुरुज्ञानी मनकी जानी अधरेबानी उच्चारी । तुम खोलो परदा है नहीं मुरदा युद्ध वृथाहीं करडारी ।। सुनके यह बानी अचरजमानी देख निशानी शिरमारी । रोवे परवीना हम मतिहीना तुमहुबचीन्हा करतारी ।। मगहर तजि बासा किया प्रवासा जहां धर्मदासा व्रतधारी । उनको शिष कीन्हा दुख हरलीन्हा शुभपथ दीन्हा यमटारी ।। सत्य पंथ चलाए भर्म मिटाए इष्ट दृढाए संसारी । रत्नजन तेरो च हमतन हेरो साहिब बलहारी ।। तीसरा प्रमाण अनंतदास कृत काशीचरित्रमेंसे—काशी मुक्तकहे सब कोई मगहर मरे सो गदहा होई ।। काशी काटे सबके पापू । मैं राखू हरिके परतापू ।। हिन्दू तुरकमें परिगइ आटी । तुम जारो तुम दीजो माटी ।। अजगैबीसो फूलमँगाई । तापै उत्तम सेजबिछाई । सकल संत मिलि नाचैं गावैं ।। ताल पखावज शंख बजावैं ।। अमर भए न छूटे शरीरा ।। गए संदेही सत्य कबीरा ।। भक्तजनमांहि अचंभा भयो । देखि फूल अपने घर गयो ।।

चौथाप्रमाण मलूकदासकृत

रागसोरठ ।। मेरा मन वश कियो साहिब कवीर ।। २ ।। ।।टेक ।। एक समय गुरुबंसी बजाई कालिंदी के तीर । सुर नर मुनि सब छकित भए हैं छकि यमुनाजल नीर ।। एक समय गुरु काशीमें प्रगटे ऐसे गुण गम्भीर ।। तजिकाशी मगहरको गएहैं दो नों दीनके पीर ।। कोइ गाडै कोइ अग्नि जरावै एक नधरताधीर । चारदाग-सेन्यारे सतगुरुअजर अमरशरीर ।। जगन्नाथके मंदिर थापे हट

गयोसागरनीर । दास मलूक सलूक कियो हैं खोज्यो साहिब कबीर ।।

पाँचवींगवाही नाभाजीकृत

भजन भरोसे आपने, मगहर तज्यो शरीर ।
अविनाशीकी गोदमें, बिलसैं दास कबीर ।।

छठीगवाही दादूजीकृत

काशी तज मगहर गये, कबीर भरोसे नाम ।
संदेही साहिब मिले, दादू पूरे काम ।।

सातबींगवाही आदिग्रन्थ साहिबकी ।

सारी उमर तप कियो काशी । अंत भयो मगहरके वासी ।
काशी मगहर एक समान । मुये कबीरा रमते राम ।।

आठवींगवाही गुसाई गरीबदासजी कृत

गरीब जिन्दा जोगी जगद्गुरु मालिक मुरशद पीर ।
दुहूं दीन झगरा मंड्या पाया नहीं शरीर ।।
अनभए कथी रैदासने मिलगए नीर कबीर ।
मगहर बीच झगरा मंड्या पाया नहीं शरीर ।।

पारषअंगकी साखी

२८ ।। गरीब काया काशी मन मगहर दुहूँके मध्य कबीर ।
काशी तजि मगहर गये पाया नहीं शरीर ।।
७० ।। गरीब काया काशीमन मगहर दुहुँके बीच मुकाम ।
जहां जुलह दोघर किया आदि अन्त विश्राम ।।
७१ ।। गरीब चार वर्ण षट आश्रम बिडरे दोनों दीन ।
मुक्त खेतको छांडिके मगहरमें लवलीन ।।
७४ ।। गरीब मगहर मेला ब्रह्मसों बनारस बनभील ।
ज्ञानी ध्यानी संगचले निन्दा करे कुचील ।।
७५ ।। गरीब भ्रम भरोसे बूडहीं कलपत हैं दोऊदीन ।
सबका सतगुरु कुलधनीमगहरमें लवलीन ।।
७८ ।। गरीब काशीपुरी कसूर क्या मगहर मुक्त क्यों होय ।

जुलहा शब्द अतीत थे जात वर्ण नहिं कोय ।।
५४६ चलेकबीरमगहरकेताई । तहांवहाफूलनसेनबिछाई । दोनों दीन अधिकपर भाऊ । दोषीदुश्मन औ सब साऊ ।।
९४७ तहां बिजलीखान चले पठानबीरसिंहबघेलापदपर वान । काशी उमडिचली मगहरको कोई न पावै तासुडरको ।
९५० तहां कबीरइक भाषा शस्त्र करे सोताहितलाका । शस्त्र करे सो महरा द्रोही । ताकीपैंडपछौडी होही ।
९५२ सुनु बिजलीखां बात हमारी । हम हैं शब्दरूप निरंकारी ।। वीरसिंह बघेलाविनती करहीं । ये सतगुरु तुम किसविधि मरहीं ।। तहां वहां चद्दर फूल बिछाए । शय्याछाँडी पदहि समाए ।। दो चद्दर दोउ दीन उठाए ।। ताके मध्य कबीर न पाए ।। ४ ।।
९५३ ।। तहां वहां अवगतफूलताशी मगहर गोर और चौरा काशी ।। अविगत रूप अलखनिरबानी तहाँ वहाँ नीरा खा छानी ।।
९५४ ।। शंख जुगन जुग जगमें पद पखानहेनपार । गरीबदास कबीर हरि अविगत अपर अधार ।।

निश्चयअंगकी साखी

१४ ।। काशी तजकर मगहर पहुँचे ऐसा निश्चय कहिये । सतगुरु
साख समझले भाई थीर पकर थिररहिये ।।
१५ ।। काशी मरे सो जाय मुक्तको मगहर गदहा होई ।
पुरुष कबीर चले मगहरको ऐसा निश्चय जोई ।।
१७ ।। काशी तजकर मगहर चले किया कबीर पयान ।
चद्दर फूल बिछेही छाँडे शब्दे शब्द समान ।
१८ ।। मगहरमें तो कब्र बनाई बिजलीखान पठाना ।
काशी चौरा उडगन भौंरा दोनों दीन दवाना ।।
६० ।। गरीब रागरूप सब तन भया सुत्तार शरीर ।
पत्थरपटके रैदासने जब सतगुरु मिले कबीर ।।
९५ ।। जन कहाता है गरीब दास छान या हे नीर खीर ।।
कुरबान कुरबान कायम कबीर ।। १७ ।।

शब्दरेखता ।। चले जब मगहरको लखे कोई । डगरको चद्दर और फूल अधिक बिछवाई ।। खडे दुहूँ दीन तिहूलोक शाका भया। शब्दमें शब्द लौलीबथाई ।।

।। ९ ।। रागमारू ।। कीना मगहर पयानाहो ।। दोनों दीन चले संग जाके हिंदू मुसलमाना हो ।। टेक ।। मुकखेतको छाँड चले हैं तजकाशी अस्थांनाहो । चारवेदके वक्ता संगहैंखोजी बडे बयानाहो ।। शालयाम सुरततोंसे ज्ञानसमुन्दर दानाहो ।। षट् दर्शसनाके संगवाले गावत वाणी नानाहो । अपना २ इष्टसँभाले बांचौ पोथी पानाहो । चद्दरफूल बिछाये सतगुरु देखैसकल जहानाहो ।। चार दागसों रहत जुलदही अवि अलख अपानाहो । वीरसिंह बघेला करैं विनती बिजलीवान पठानाहो ।। दो चद्दर बखशीश करी हेंदीना यह परवानाहो।।नूर नूर निर्गुणपदमेसा देवभये हैरानहो।। पद लौलीन भर अविनाशी पाये पिंड न प्रापाहो ।। शब्दस्वरूप साहिब सरवंगी शब्दै शब्द समानाहो ।। दासगरीब कबीर अशं में फरकें ध्वजा निशाना हो ।।

१० देखया मगहर जहूराहो । काशीमें कीरत कर चालेंमिले नूरमें नूराहो ।। टेक ।। माया आदि अंशो उतरी बनी अप्सरा हूराहो ।। हम तो बरें कबीर पुरुष तूहै दुलहा पूराहो ।। माया कहै कबीर पुरुषसे देखो वदन जहूराहो ।। अर्श निदान स्वर्गमें मंदिर भीगैं हमकी शूरा हो । कहैं कबीर सुनो री माया कुटिल नजर तुम धूराहो।। जिन भोगी पोईकलरोगी होगये धूरमधूराहो । माया कहे कबीर-पुरुषसे मैंहूँ जगसे दूराहो ।। मैं तुम्हरी पटरानी दासी राखोपलक हुजूराहो ।। कहैं कबीरसुनोरीमाया तुम तो लड्डू बूराहो । जो तुझे खाव सो बहिजावे तासु अकल भई कूराहो । श्वेत छत्र जहांश्वेत मुकुटहै बाजे अनहद तूरा हो । दास गरीब कहै सुन माया हमसे रहिये दूरा हो ।।

रागनिपाली ।। जालिम जुलहे जारत लाई ऐसा नाद बजायाहै ।। टेक ।। काजी पंडितपकारपछारेतिनकोज्वाबन आया ।। षट्दर्शन-सबखारजीकीनेदोनोदीनचिताया है । सुर नर मुनि जन भेद न पावें दुहुँका पीर कहाया है ।। शेष महेश गणेश रु थाके जिनको पार न पायाहै ।। २ ।। नौअवतार रहे सब हारे जुलहो जहीं हराया है । चरचा आनिपरी ब्रह्माकी चारोंवेदहरायाहै ।। ३ ।। मगहरदेशको किया पयाना दोनोंदीन डराया है । गोरकफनहंस काढदीजो चद्दर-फूलबिछाया है ।। ४ ।। गैबी मंजिल मार फतऔंडी चादर बीच न पायाहै । काशी बासीहै अविनाशी नादबिंदनहिं आया है ।। २ ।। यानाजरियजुलाहा शब्दअतीत समायाहै । चारदागसे रहता सत गुरु सो मेरे मनभाया है ।। ६ ।। मुक्तलोकके मिले परगने अटक पटा लिखवाया है । फिर तागीर करे नहीं कोई धुरकाचाकर लाया है ।। ७ ।। सख्त हुजुर चाकर लागे सतका डाग दगायाहै । सब लोकनमें सेज हमारी अविगत नगर बसा याहै ।। ८ ।। चंपा नूर नूर बहु भाँति आन पद्म झलकाया है । धुनबंदी छोड गुसांई दासगरीब बधाया है । मगहर जानेके और बहुतसे शब्द हैं परंतु यहां थोडेही लिखे हैं ।। ४३ ।।

सोरठ–काशीपुरके बासीहो एक काशीपुरके बासी नाम कबीरा मतिके धीरा जगसो रहत उदासी ।। टेक ।। पांच पचीस किये वश अपने पकड्या मन्न मवासी । माया मान बडाई छाँड्यो मिले राम अविनासी ।। १ ।। सुर नर मुनि जन और योगेश्वर बंछितमरतसंन्यासी । मुक्तिक्षेत्र तज गए मगहरको ऐसे दृढ विश्वासी ।। २ ।। अग्नि न जरे धरनि ना गाडे परे न यमकी फाँसी । सन्देही पदमांहि समाने देख्या फूलसुवासी ।। हिन्दु तुर्क दुहुँते न्यारा कर्म धर्म कियो नासी । दासगरीब कहै वहां कोई एक पहुँच बाता बहुत बनासी ।।

सतनाम–श्रीकबीर साहिब श्रीनानकजीसे ७१ वर्षउमरमें

बडेथे ४९ वर्ष दोनों आचार्योंका वर्तमान समय एक रहा २१ वर्ष पीछेसे श्रीनानक साहिबका चलावा हुआ है । जो जो बातें श्रीकबीर साहिबके आखिरी गायब होनेकी हैं वैसीही श्रीनानक साहिबकी बताते हैं । श्रीकबीरजीके ग्रन्थोंकी जिल्द १५२१ के सालमें बन्द होचुकी है।।और श्रीनानकजीकी वाणीकी जिल्द १६६१ में बन्द रही है ।। १४३ ।। वर्षपीछे जो २ वाणी श्रीकबीरजीके ग्रंथोंमें हैं उनमेंसे बहुतसी वाणी श्रीनानकजीके ग्रंथोंमें हैं ।। जो ज्ञानीलोग कहते हैं कि, जो वाणी श्री आदि ग्रन्थ साहिबमें हैं वह कबीर साहिबकी कथी हुई नहीं है जो वाणी १४० वर्ष पहले किसी ग्रंथमें हैं उसको फिर दूसरा कोई अपने ग्रंथमें लिखले तो क्या वह उसका कथन होसका है वाणीसे साफ जाहिर है कि, यह मत भी वैष्णव है और यह दोनों एकही मत रखते हैं ।। अब जो फरक है सो सब गिजाका है एकके विरुद्ध दूसरा खाता है मद्य मांस भाँग तमाखू आदि कहीं भी पान करना नहीं लिखा है ।।

श्रीकबीरजी संवत्.		श्रीनानकजी. संवत्.	
शुरू.	अंत	शुरू.	अंत.
५	५ ५	५२६	५९६

इति कबीरकसौटी सम्पूर्णा शुभम्

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

